दिव्य जीवन : एक चिन्तन

रूही संस्थान

पुस्तक 1

दिव्य जीवन :
एक चिन्तन

रूही संस्थान

श्रृंखला की पुस्तकें :

रूही संस्थान द्वारा विकसित इस श्रंखला की वर्तमान पुस्तकों की सूची नीचे दी गई है। इन पुस्तकों का उददेश्य युवाओं व व्यस्कों द्वारा अपने समुदायों की सेवा करने की क्षमता बढ़ाने के क्रमबद्ध प्रयासों में पाठयक्रम की मुख्य धारा में उपयोग किया जाना है। रूही संस्थान इस श्रंखला की तीसरी पुस्तक जो बहाई बच्चों की कक्षा के शिक्षकों को प्रशिक्षित करने से संबधिंत है, की शाखा के रूप में एक अन्य पाठयक्रम भी विकसित कर रहा है और इसे इस सूची में इंगित भी किया गया है। यह तथ्य ध्यान में रहे कि सूची में क्षेत्र में हुये विकास के अनुभवों के आधार पर बदलाव भी होगा। इसमें नई पुस्तकों को सम्मिलित किया जायेगा जब पाठयचर्या संबंधी तत्व विकसित होकर ऐसे स्तर पर पहुँच जायेंगे जब उन्हें वृहद स्तर पर उपलब्ध कराया जा सके।

पुस्तक 1	दिव्य जीवन : एक चिन्तन
पुस्तक 2	सेवा का संकल्प
पुस्तक 3	बच्चों की कक्षायें, स्तर 1
	बच्चों की कक्षायें, स्तर 2 (शाखा पाठयक्रम)
	बच्चों की कक्षायें, स्तर 3 (शाखा पाठयक्रम)
	बच्चों की कक्षायें, स्तर 4 (शाखा पाठयक्रम)
पुस्तक 4	युगल अवतार
पुस्तक 5	किशोर ऊर्जा को उजागर करना
	प्रारम्भिक संवेग : पुस्तक 5 का प्रथम शाखा पाठ्यक्रम
	बढ़ता दायरा : पुस्तक 5 का दूसरा शाखा पाठ्यक्रम
पुस्तक 6	प्रभुधर्म का शिक्षण
पुस्तक 7	सेवा के पथ पर साथ–साथ चलना
पुस्तक 8	बहाउल्लाह की संविदा
पुस्तक 9	एक ऐतिहासिक परिदृश्य प्राप्त करना
पुस्तक 10	जीवंत समुदायों का निर्माण
पुस्तक 11	भौतिक साधन
पुस्तक 12	परिवार एवं समुदाय
पुस्तक 13	सामाजिक क्रिया में शामिल होना
पुस्तक 14	जनसंवाद में भागीदरी

कॉपीराइट © 1997, 1999, 2008, 2009, 2011, 2012, 2013, 2017, 2020 रूही फाउंडेशन, कोलंबिया
सर्वाधिकार सुरक्षित। संस्करण 1.1.1.PE प्रकाशित अप्रैल 1997
संस्करण 4.1.2.PE.PV (अनंतिम अनुवाद) जुलाई 2021
ISBN 978-958-59880-7-1

Reflexiones sobre la vida del espíritu के रूप में स्पेनिश में मूल प्रकाशन
कॉपीराइट © 1987, 1995, 2008, 2020 रूही फाउंडेशन, कोलंबिया
ISBN 978-958-59880-3-3

रूही संस्थान
काली, कोलंबिया
ई–मेल : instituto@ruhi.org
वेबसाइट : www.ruhi.org

विषय सूची

ट्यूटरों के लिए कुछ विचार......................... v

बहाई लेखों को समझना............................ 1

प्रार्थना.. 15

जीवन और मृत्यु.................................... 31

ट्यूटरों के लिए कुछ विचार

रुही संस्थान द्वारा चलाये जा रहे पाठ्यक्रमों की मुख्य श्रंखला की पहली पुस्तक दिव्य जीवन : एक चिंतन का अध्ययन कर रहे समुदायों की संख्या पूरे विश्व में बढ़ती जा रही है। बहुत सारे मामलों में सामग्री का अध्ययन तथा उस पर चिंतन मित्रों के एक समूह द्वारा किया जाता है, जो स्टडी सर्कल का निर्माण कर सकते हैं जो नियमित मिलता है, सघन अध्ययन के लिए आयोजित अभियान में एक साथ आते हैं अथवा विद्यालय अवकाश के दौरान एकत्र हो सकते हैं। अवसर कोई भी हो, समूह का एक सदस्य ट्यूटर का कार्य करता है। ट्यूटर तथा अन्य प्रतिभागियों के मध्य का संबंध शिक्षक–विद्यार्थी का नहीं होताः सभी सजग रूप से ऐसी प्रक्रिया में संलग्न हैं जिसमें प्रत्येक सीखना चाह रहा है। परंतु ट्यूटर विचार विमर्श का अनासक्त अथवा सुसुप्त समन्वयक भी नहीं होता। श्रंखला के पर्याप्त पाठ्यक्रमों को पूर्ण कर लेने और उन के द्वारा प्रोत्साहित सेवा कार्यों को हाथ में लेने के कारण वह अध्ययन की जा रही सामग्री के उद्देश्य को प्राप्त करने में समूह के प्रत्येक सदस्य की मदद करने में सक्षम है। वे जो पुस्तक 1 के ट्यूटर के रूप में कार्य करते हैं, वे इस परिचय में दिये विचारों का समय समय पर पुनरवलोकन मददगार पा सकते हैं।

पूरे विश्व में प्रतिभागी इस प्रथम संस्थान पाठ्यक्रम विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं। कुछ पहले से ही बहाई समुदाय के सदस्य हैं जो उनके द्वारा अंगीकार किए गए धर्म की सेवा करने की अपनी क्षमता बढ़ाने की आशा करते हैं। वहीं अन्य कुछ जन बहाई आदर्शों से आकर्षित हो समुदाय के लक्ष्यों और प्रयासों से स्वयं को परिचित कराना चाहते हैं। और विशेषकर बढ़ती संख्या में युवा जन हैं जो समुदाय की सेवा करने की अपनी क्षमता, बहुधा बहाई समुदाय द्वारा चलाये जा रहे किसी ना किसी कार्यक्रम द्वारा बढ़ाना चाहते हैं।

प्रारम्भ से ही, सभी प्रतिभागियों को यह स्पष्ट होना चाहिए कि रुही संस्थान के पाठ्यक्रम मानवता की सेवा के पथ का रेखन करते हैं जिस पर हम में से प्रत्येक अपनी गति से चलता है, सहायता करते तथा दूसरों से सहायता प्राप्त करते हुए। इस पथ पर चलने का अर्थ है दोहरे नैतिक उद्देश्य का अनुसरणः अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास पर ध्यान देना और समाज के रूपान्तरण में योगदान देना। इस पथ पर प्रगति में अपरिहार्य है, अनेक सामर्थ्यताओं का विकास जिन्हें समझ और ज्ञान, आध्यात्मिक गुण और प्रशंसनीय अभिवृत्तियों की और साथ ही योग्यताओं और कुशलताओं की भी आवश्यकता होती है। ज्ञान के स्रोत जिस पर संस्थान की पुस्तकें आधारित हैं, एक ओर तो बहाई धर्म की शिक्षाएँ हैं, और दूसरी ओर भौतिक और आध्यात्मिक सभ्यता को बढ़ाने में विश्वव्यापी बहाई समुदाय का एकत्र होता अनुभव है। हम किस प्रकार के मनुष्य बन सकते हैं और किस प्रकार की सभ्यता का निर्माण कर सकते हैं, इसके प्रति बहाउल्लाह की परिकल्पना संस्थान को प्रेरित करती है। यह माना जाता है कि पृष्ठभूमि से स्वतंत्र, सभी प्रतिभागी इस परिकल्पना को अंगीकार करने के लिए तैयार हैं, जो कि प्रत्येक पुस्तक की प्रत्येक इकाई में सुस्पष्ट है।

ऐसे विश्व में जहां धार्मिक पंथ तथा विचारधारायें, समर्थकों को जुटाने के लिए किसी भी उपाय का उपयोग करने के लिए तैयार हैं, बहाई धर्म से अपरिचित कोई भी, रुही संस्थान के आशय के प्रति अकृत्रिम प्रश्न पूछ सकता है, विशेषकर, "क्या मुझ से अपना धर्म बदलने के लिए कहा जा रहा है?" अथवा "क्या मुझे धर्म स्वीकार करने के लिए कहा जा रहा है?" इस प्रकार के प्रश्न, ट्यूटर को, पाठ्यक्रमों की श्रंखला के ऊपर बताए गए उद्देश्य के बारे में समझाने का अवसर प्रदान करते हैं। जहां यह स्वाभाविक है कि बहाई अपने मित्रों को समुदाय में सम्मिलित होता देखने के प्रति उत्सुक होंगे, ट्यूटर इस बात को जोड़ना चाह सकता है कि उनकी स्वयं की शिक्षाएँ धर्मांतरण में शामिल होने की मनाही करती हैं।

संस्थान पाठ्यक्रमों द्वारा खोले गए सेवा पथ पर चलना बहाउल्लाह की शिक्षाओं की सतत गहन होती समझ की मांग करता है, जिसे सामग्री स्पष्ट रूप से रखने का प्रयास करती है: स्वीकार्यता तथा आस्था ऐसे विषय हैं जिन पर प्रत्येक को स्वतंत्र तथा बगैर किसी दबाव के विचार करना चाहिए।

बगैर किसी आश्चर्य के, तब समझ के इस प्रश्न को जो श्रंखला की प्रत्येक पुस्तक के इतना केंद्र में है, यह पहली पुस्तक प्रारम्भ होती है। पवित्र लेखों को पढ़ना व्यक्ति द्वारा अपने जीवन में सामने आए हजारों पृष्ठों को पढ़ने की भांति नहीं है। इकाई "बहाई लेखों को समझना" पवित्र शब्दों को प्रतिदिन पढ़ने और उनके अर्थ पर मनन करने की आदत को बढ़ावा देना चाहती है, एक ऐसी आदत जो प्रतिभागियों की अत्यंत मदद करेगी जब वे सेवा पथ पर प्रयाण करेंगे। इस अध्ययन में मार्गदर्शन करने के लिए, ट्यूटर को समझ के विषय पर अत्यंत ध्यान देना होगा।

बहाई लेखों में गहन आध्यात्मिक सत्य छिपे हुए हैं, और जब हम उनके अनंत अर्थ की समझ को बढ़ावा देने का प्रयत्न करते हैं, हम जान पाते हैं कि हम कभी निश्चित अंत तक नहीं पहुँच सकते। किसी उद्धरण को पहली बार पढ़ते समय उसके तुरत अर्थ की एक प्रारम्भिक समझ हम समान्यतया प्राप्त कर पाते हैं। इकाई का भाग 1 इसे प्रारम्भ बिन्दु मानता है। इस प्रकार, पहला उद्धरण "विश्व का सुधार शुद्ध और अच्छे कर्मों के माध्यम से, सराहनीय एवं यथोचित आचरण के माध्यम से सम्पादित किया जा सकता है।" प्रतिभागियों से मात्र यह पूछा जाता है कि विश्व का सुधार किस प्रकार संपादित किया जा सकता है? एक नजर में, इस प्रकार के प्रश्न और अभ्यास बहुत साधारण लगते हैं। किन्तु वर्षों का अनुभव इस प्रकार प्रारम्भ करने के संस्थान के निर्णय को उचित ठहराता प्रतीत होता है। हम सभी को स्मरण करने की आवश्यकता है कि किसी अनुच्छेद में सत्य की परतों को पाने की शीघ्रता में, मन को इसके प्रत्यक्ष अर्थ को नजरअंदाज नहीं कर देना चाहिए। प्रथम स्तर की समझ पर ध्यान देना समूह चिंतन हेतु महत्वपूर्ण है: यह विचारों की एकता को प्रबलित करता है, जो आसानी से प्राप्त की जा सकती है जब निजी विचारों को दैवीय बुद्धिमत्ता से प्रकाशित किया जाता है।

यह जानना यहाँ महत्वपूर्ण है कि अधिकतर अनुच्छेदों के प्रत्यक्ष अर्थ की समझ किसी एक शब्द पर प्रसंग से परे विचार विमर्श से लाभान्वित नहीं होती। इसके साथ ही, कुछ अवसरों पर यह आवश्यक हो सकता है कि समूह को शब्दकोश का उपयोग किसी शब्द के लिए करना पड़े। जो अधिक लाभकारी हो सकता है, वह है कि प्रतिभागी सीखें कि किस प्रकार शब्दों के अर्थ पूरे वाक्यों और अनुच्छेदों से निकाले जाएँ।

प्रत्यक्ष अर्थ के क्षेत्र से परे समझ को विकसित करने के लिए वे उदाहरण सहायक हो सकते हैं जिनमें विचार सुदृढ़ अभिव्यक्ति पाते हों। इस ओर जो आवश्यक हैं, वे हैं, स्पष्ट अभ्यास। उदाहरण के लिए अभ्यास 2 में, प्रतिभागियों से उनके द्वारा तुरंत ही पढ़े गए अनुच्छेद के प्रकाश में यह तय करने के लिए कहा जाता है कि क्या कुछ कार्य प्रशंसनीय हैं। भाग 4 में इसी प्रकार के अभ्यास में उनको प्रोत्साहित किया जाता है कि पाँच गुणों के नाम लिखें और निर्णय लें कि क्या इनमें से किसी को सत्यवादिता के अभाव में प्राप्त करना संभव है—जिसे पवित्र लेखों में "सभी मानवीय गुणों का आधार" बताया गया है।

अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, यह इकाई दिये गए अनुच्छेदों के कुछ निहितार्थों पर विचार करने की चुनौती देकर समझ में आगे विकास की मांग करती है। भाग 2 में उनको यह तय करना है कि क्या यह कथन "संसार में अच्छे लोग इतने कम हैं कि उनके कार्यों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता" सत्य है? यहाँ मात्र उनका विचार प्राप्त करने का आशय नहीं है। ट्यूटर यहाँ रुक कर प्रतिभागियों के उत्तरों के कारणों पर प्रश्न करे। यहाँ पर कथन निश्चित ही झूठ हो क्योंकि यह पिछले भाग के पहले उद्धरण पर समूह द्वारा पहुंचे गए निर्णय के विपरीत है। यह अभ्यास कि क्या बहाई दूसरों से अपने पापों की स्वीकारोक्ति कर सकते हैं, इसी प्रकार का अभ्यास है। यह शिक्षाओं में पाप से मुक्ति पाने के उपाय के रूप में स्वीकारोक्ति की मनाही को संदर्भित करता है जो किसी भी पढे गए उद्धरण में स्पष्ट नहीं बताया गया है, किन्तु कथन "अंतिम लेखा जोखा हो उससे पहले तू प्रतिदिन अपने कर्मों की गणना कर लिया कर" के अर्थ की जांच करने पर पाया जा सकता है।

इस इकाई के अभ्यास किसी भी तरह विचाराधीन अनुच्छेदों में निहित विभिन्न अर्थों को सम्मिलित करने का प्रयास नहीं करते। एक प्रश्न जिसके बारे में सभी ट्यूटरों को विचार करना होगा वह है कि किसी भी दिए अभ्यास में कितनी चर्चा की जानी चाहिए। यहां यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि कई संबंधित लेकिन परिधीय अवधारणाओं का परिचय देकर विचार–विमर्शों को लंबा खींचने से सामग्री की प्रभावशीलता कम हो जाती है। प्रत्येक समूह को प्रगति की एक उचित लय स्थापित करनी होगी; प्रतिभागियों को एक सुस्पष्ट भाव महसूस होना चाहिए कि वे अपनी संभावनाओं के अनुसार सतत रूप से आगे बढ़ रहे हैं। लेकिन, ट्यूटरों को सतर्क रहना चाहिए ताकि भागों के अभ्यासों को विचारपूर्ण विश्लेषण के बिना जल्दी–जल्दी और सतही तौर पर ना किया जाए; जो समूह इस तरह, सिर्फ उत्तरों को लिखकर आगे बढ़ते हैं, उन्होंने कभी भी स्थाई परिणाम प्राप्त नहीं किए हैं।

एक अंतिम बिंदु उल्लेख करने योग्य हैः यह ट्यूटर पर निर्भर करता है कि वह सुनिश्चित करे कि समूह का प्रत्येक प्रतिभागी सामग्री द्वारा प्रोत्साहित सीखने की प्रक्रिया में संलग्न रहे। किसी व्यक्ति पर बोलने के लिए दबाव डाले बिना प्रतिभागियों की सहभागिता प्राप्त करना अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है। शुरुआत से ही जो समझा जाना चाहिए वह यह है कि इस चुनौती का सामना कभी ही ऐसे प्रश्नों को पूछ कर किया जा सकता हो जैसे कि, "आपके विचार में इसका क्या अर्थ है?" इस तरह के प्रश्न ज्ञान और सत्य को महज राय के स्तर तक सीमित कर देते हैं। और फिर एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना कठिन साबित हो जाता है जिसमें समूह के सदस्यों के बीच ऐसा परामर्श हो सके जो बढ़ती समझ उत्पन्न करता हो।

इस पुस्तक की दूसरी इकाई पहली की तरह ही एक ऐसी आदत से संबद्ध है जो आध्यात्मिक जीवन के लिए अत्यावश्यक हैः नियमित रूप से प्रार्थना करना। प्रारंभिक भाग में "सेवा का पथ" की अवधारणा स्पष्ट की जाती है, जो यह संकेत देता है कि, इस पथ पर चलने के लिए हमें दोहरे उद्देश्य से अनुप्राणित होना चाहिए। प्रतिभागी उद्धरणों के प्रारंभिक समुच्चय की जांच करते हैं जो इस उद्देश्य की प्रकृति के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो एक ऐसा विषय है जिसका भविष्य के पाठ्यक्रमों में विस्तार किया जाएगा।

इस विषय की पृष्ठभूमि पर यह इकाई प्रार्थना के महत्व के बारे में अपनी जांच पड़ताल प्रारंभ करती है। यह एक ऐसा तरीका अपनाती है जो पिछले अनुच्छेदों में वर्णन किये तरीके जैसा ही है। प्रश्नों और अभ्यासों को इस तरह से बनाया गया है कि वे अध्ययन किए जा रहे पवित्र लेखों से लिए गए अनुच्छेदों के अर्थ की समझ को बढ़ाते हैं। जैसे–जैसे समूह इस इकाई में आगे बढ़ते हैं, ट्यूटर के लिए आवश्यक हो सकता है कि वह पूर्व की व्याख्याओं और प्रथाओं में जड़ पकड़ी हुई धारणाओं का विश्लेषण करते हुए संदेह को दूर करे। कुछ परंपराओं में, रीति–रिवाजों ने आहिस्ता–आहिस्ता आंतरिक अवस्था के महत्व को निष्प्रभ कर दिया है, और कई लोग प्रार्थना की आवश्यकता की उपेक्षा करते हैं, जो, मानव आत्मा के लिए, उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना शरीर के पोषण के लिए खाना।

तो फिर, विशेषकर यह इकाई प्रतिभागियों में "ईश्वर से वार्तालाप" करने की और उसके समीप जाने की मनोरथ को जगाने की अभिलाषा रखती है। संबोधित किए गए विचारों में से कुछ हैं प्रार्थना की स्थिति में जाने का क्या अर्थ है, जब उस स्थिति में जाते हैं तब हमारे मन–मस्तिष्क का हाव–भाव, और वे परिस्थितियां जो हमारे आसपास निर्मित की जानी चाहिए, चाहे हम अकेले हों या किसी सभा में। निश्चित ही, सामूहिक उपासना के द्वारा निर्मित बल के बारे में कुछ विचार करने के बाद, प्रतिभागियों को प्रार्थना और भक्ति के लिए एक बैठक आयोजित करने पर विचार करने को कहा जाता है।

इस पुस्तक की तीसरी इकाई, "जीवन और मृत्यु" का अध्ययन, यह आशा की जाती है कि, सेवा के पथ पर चलने की प्रतिबद्धता को मजबूत करेगी और उसे और गहरा अर्थ प्रदान करेगी। इस दुनिया में सेवा को जीवन के पूर्ण प्रसंग में समझा जा सकता है, जो इस भौतिक अस्तित्व के परे जाता है और हमेशा के लिए आगे बढ़ता है जैसे–जैसे हमारी आत्मा ईश्वर के लोकों में प्रगति करती जाती है। शिक्षा

की एक प्रक्रिया में, तकनीकी प्रशिक्षण के विपरीत, प्रतिभागियों को बढ़ते तौर पर वे जो कर रहे हैं उसके अर्थ और महत्व के बारे में सचेत होते जाना चाहिए। अनुभव दर्शाता है कि यदि ऐसी सचेतना बढ़ती है तब ही, वे अपने को सीखने की प्रक्रिया के सक्रिय, जिम्मेदार "स्वामी" समझेंगे।

इस इकाई का प्रत्येक भाग बहाई लेखों से लिए गए एक या तीन उद्धरणों के साथ प्रारंभ होता है, जिसके बाद कुछ अभ्यास दिए गए हैं। इस इकाई में उद्धृत अनुच्छेदों की भाषा पिछली दो से अधिक दक्षता की मांग करती है। अवश्य ही, समूह के लिए कठिन शब्दों पर ज्यादा सोचना जरूरी नहीं है; ट्यूटर यह निश्चित करना चाहेगा कि सभी लोग प्रत्येक भाग में संबोधित केंद्रीय विचार को समझते हैं, जो कि वास्तव में सभी अभ्यास स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं।

विषय की प्रकृति को देखते हुए, ऐसे अभ्यास गिने–चुने हैं जिनमें यथार्थ उदाहरण शामिल हों। अधिकांश वैचारिक स्तर पर कार्य करते हैं। यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि अभ्यासों में पूछे गए कुछ प्रश्नों का सरसरी तौर पर अथवा स्पष्ट रूप से उत्तर नहीं दिया जा सकता। उनका परिचय इस विषय के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए किया गया है; यदि प्रतिभागी सिर्फ ऐसे प्रश्नों पर विचार करें, तो सीखने का उद्देश्य पूरा हो जाएगा।

प्रारंभ के कई भाग आत्मा और शरीर के बीच के संबंध पर केंद्रित हैं, जो, मिलकर, अस्तित्व के इस जगत में मनुष्य को बनाता है। इन भागों में प्रस्तुत केंद्रीय विचार यह है कि आत्मा एक भौतिक निकाय नहीं है; शरीर के साथ इसके संबंध की तुलना प्रकाश के साथ की जा सकती है जो एक दर्पण में प्रकट होता है। ना ही इसकी सतह को ढकने वाली धूल और ना ही इस दर्पण का अंतिम विनाश इस प्रकाश की चमक को प्रभावित कर सकता है। मृत्यु सिर्फ परिस्थिति में बदलाव है, जब शरीर और आत्मा के बीच का संबंध टूट जाता है; जिसके बाद, आत्मा अनंतता तक अपने रचयिता की ओर प्रगति करता रहती है।

इसके बाद यह इकाई जीवन के उद्देश्य के प्रश्न की ओर मुड़ती है– ईश्वर को जानना और उसकी उपस्थिति प्राप्त करना। यहां पर चर्चाएं दो वृहत् विषयों के इर्द–गिर्द रहती हैं। पहला विषय है इस संसार में हमारे जीवन का उद्देश्य, और दूसरा है मृत्यु के बाद आत्मा की यात्रा। आत्मा ईश्वर का चिन्ह है और उसके सभी नामों और गुणों को प्रतिबिंबित कर सकती है। लेकिन, मनुष्य के अंदर की क्षमता अंतर्निहित है; इसे सिर्फ ईश्वर के प्रकटरूपों की सहायता से विकसित किया जा सकता है, वे पवित्र दैविय हस्तियां जो समय–समय पर मानवजाति को मार्गदर्शन देने के लिए आती हैं। उनके द्वारा प्रदान किए गए आध्यात्मिक शिक्षा के माध्यम से, हमारे अंदर छिपे कोष प्रकट किये जा सकते हैं।

जहां तक मृत्यु के बाद आत्मा की यात्रा का प्रश्न है, प्रतिभागियों को मनन करने के लिए विचारों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की गई है: कि वे लोग जो ईश्वर के प्रति निष्ठावान है वह सच्ची प्रसन्नता प्राप्त करेंगे; कि हम में से कोई भी अपना अंत कैसा होगा, नहीं जान सकता है, और, इसीलिए, हमें एक दूसरे को क्षमा करना चाहिए और दूसरों से श्रेष्ठ नहीं समझना चाहिए; कि अगले लोक में, इसी लोक की तरह ही, आत्मा प्रगति करती रहेगी और यहां हमने जो आध्यात्मिक शक्तियों का विकास किया है वे हमे वहां सहारा देंगी और हमारी मदद करेंगी; कि हम अपने प्रियजनों को अगले लोकों में पहचानेंगे, इस दुनिया के अपने जीवन को याद रखेंगे, और पवित्र एवं पुण्यात्माओं के सहचर्य का आनंद लेंगे।

यह इकाई बहाउल्लाह के लेखों से लिए गए एक अनुच्छेद के साथ अंत होती है जिसमें हमें अगले लोक के लाभों के बारे में आश्वासित किया जाता है और प्रेरित किया जाता है कि हम इस जीवन के परिवर्तनों और घटनाओं से दुखी ना हों। इसके बाद, प्रतिभागियों ने जो पढ़ा है उसका अपने जीवन पर इसके आशय पर उन्हें चिंतन करने को कहा जाता है।

बहाई लेखों को समझना

उद्देश्य

पवित्र लेखों से अनुच्छेदों को प्रतिदिन पढ़ने की क्षमता प्रबलित करना और उनके अर्थ पर मनन करना।

भाग 1

इस इकाई का उद्देश्य पवित्र लेखों से अनुच्छेदों को प्रतिदिन पढ़ने तथा उनके अर्थ पर मनन करने की आदत को विकसित तथा प्रबलित करना है। इकाई एक साधारण अभ्यास से प्रारम्भ होती है जो आपसे लेखों से एक कथन पढ़ने तथा एक प्रश्न का उत्तर देने को कहता है, जिसका उत्तर वह कथन स्वयं है। यद्यपि अभ्यास आसान है, यह दिये कथनों के अर्थ पर चिंतन करने तथा उन्हें कंठस्थ करने में आपकी मदद करेगा।

"विश्व का सुधार शुद्ध और अच्छे कर्मों के माध्यम से, सराहनीय एवं यथोचित आचरण के माध्यम से सम्पादित किया जा सकता है।"[1]

1. विश्व का सुधार किस प्रकार सम्पादित किया जा सकता है ? ____________________

____

____

"सावधान, हे बहा के जनों, ऐसा न हो कि तुम उनके तरीकों से चलो जिनके शब्द उनके कर्मों से भिन्न हैं।"[2]

2. हमें किनके रास्तों पर नहीं चलना चाहिए ? ____________________

____

____

"हे अस्तित्व के पुत्र! अंतिम लेखा–जोखा हो, उससे पहले तू प्रतिदिन अपने कर्मों की गणना कर लिया कर।"[3]

3. अंतिम लेखा–जोखा हो उससे पहले हमें क्या करना चाहिए ? ____________________

____

____

"कहोः हे भ्रात! तुम्हारे शब्द नहीं, अपितु कर्म आभूषण हों।"[4]

4. हमारा सच्चा आभूषण क्या होना चाहिए ?____________________

____

"पावन शब्द एवं पवित्र तथा अच्छे कर्म दिव्य महिमा की ऊँचाइयों को प्राप्त होते हैं।"[5]

5. पावन शब्द एवं पवित्र तथा अच्छे कर्म क्या करते हैं ? ____________________

____

____

भाग 2

नीचे उन उद्धरणों से सम्बन्धित कुछ अभ्यास दिये जा रहे हैं, जिन्हें आपने भाग एक में अभी पढ़ा है। इनका उद्देश्य आपके समूह में इन अनुच्छेदों के महत्व पर आगे चिंतन करना है और इन्हें यांत्रिक तरीके से नहीं करना है। इसका अर्थ यह नहीं कि प्रत्येक अभ्यास पर बहुत अधिक विचार विमर्श की आवश्यकता है। जब अभ्यास चुनौती पूर्ण हो तो आपके समूह के ट्यूटर इसकी पूर्णतया जांच करने में आपकी मदद करेंगे।

1. "प्रशंसनीय" का अर्थ है जो "प्रशंसा" के योग्य हो। निम्नलिखित में कौन–कौन से कार्य प्रशंसनीय हैं ?

_______ अच्छा कर्मचारी बनना

_______ दूसरों का आदर करना

_______ अध्ययनशील बनना

_______ झूठ बोलना

_______ आलसी होना

_______ दूसरों की सेवा करना

2. "अंतिम लेखा–जोखा हो उससे पहले" इस वाक्यांश का क्या अर्थ है ? ____________________

____

3. निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं ?

_______ संसार में अच्छे लोग इतने कम हैं कि उनके कार्यों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

_______ यदि कुछ दूसरों के विचारों से मेल खाता है तो सही होता है।

_______ सही वह होता है जो ईश्वरीय शिक्षाओं के अनुरूप होता है।

4. निम्नलिखित में से कौन से कर्म पवित्र और अच्छे हैं ?

_______ बच्चों का ख्याल रखना और उन्हें शिक्षित करना

_______ चोरी करना।

_______ दूसरों की उन्नति के लिए प्रार्थना करना।

_______ मुसीबत से निकलने के लिए छोटा–सा झूठ बोलना।

_______ दूसरों की सहायता करके पुरस्कार की आशा करना।

5. निम्न में से किन परिस्थितियों में एक व्यक्ति के कार्य उसके शब्दों से भिन्न हैं ?

_______ कोई दोहराता रहता है कि हम सभी एकता में रहें लेकिन ऐसा व्यवहार करता है जिससे झगड़ा उत्पन्न होता है।

_______ कोई पवित्र जीवन के महत्व की प्रशंसा तो करता है पर विवाह से परे यौन संबंध रखता है।

_______ कोई ऐसे धर्म को मानने की बात कहता है जिसमें मदिरा पान की मनाही है, पर खुद कभी कभी शराब पीता है।

_______ कोई महिलाओं और पुरुषों की समानता का समर्थक तो है, पर नियोक्ता के रूप में, एक प्रकार के कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों से कम भुगतान करता है।

6. क्या एक बहाई को अन्य लोगों के सामने अपने पाप स्वीकार करने की अनुमति है ? _______

____

7. हमें पाप स्वीकार करने के बजाय क्या करना चाहिये ? _______________________

____

8. "स्वर्गिक महिमा" की ऊँचाई का क्या अर्थ है ? _______________________

____

9. बुरे कर्मों का दुनिया पर कैसा प्रभाव पड़ता है ?_______________________

____

10. दुष्कर्मी पर उसके दुष्कर्मों का क्या प्रभाव पड़ता है ?_______________________

____

भाग 3

अब लेखों से निम्न उद्धरणों को पढ़ें और उन पर चिंतन करें। तब इन्हें कंठस्थ करने का प्रयास करें।

"सभी मानवीय सद्‌गुणों का आधार सत्यवादिता है।"[6]

1. सभी मानवीय गुणों का आधार क्या है ? _______________________

____

"ईश्वर के समस्त लोकों में किसी भी आत्मा के लिये सत्यवादिता के बिना प्रगति एवं सफलता असंभव है।"[7]

2. सत्यवादिता के बिना क्या असम्भव है ? ____________________

____

"हे लोगों ! अपनी जिह्वा को सत्यवादिता के सौन्दर्य से निखारो और अपनी आत्मा को ईमानदारी के आभूषण से विभूषित करो।"[8]

3. हमें अपनी जिह्वा को किससे निखारना चाहिए ? ____________________

____

4. हमें अपनी आत्मा को किससे विभूषित करना चाहिए। ____________________

____

"अपनी आँख पवित्र, अपने हाथ वफादार, अपनी जिह्वा सत्यवादी तथा अपने हृदय को प्रकाशित होने दो।"[9]

5. हमारी आँख कैसी होनी चाहिए ? ____________ हमारे हाथ ? ____________
हमारी जिह्वा ? ____________ हमारा हृदय ? ____________

"वे जो ईश्वर की छत्रछाया तले निवास करते हैं और उसके अनन्त प्रकाश के आसन पर प्रतिष्ठित हैं, वे भूख से मर भी रहे हों तब भी, अपने पड़ोसी की सम्पदा की ओर हाथ नहीं बढ़ाएँगे और गलत ढंग से प्राप्त करने का प्रयास नहीं करेंगे।"[10]

6. यदि भूख से मर भी रहे हों तब भी हमें क्या करने से इन्कार कर देना चाहिए ? ____________

____

____

भाग 4

जैसा कि दूसरे भाग में आपने ध्यान दिया होगा, कुछ अभ्यासों को सुस्पष्ट उत्तर की आवश्यकता होती है। ऐसे में अगर उत्तर के सम्बन्ध में कोई शंका हो तो आपके ट्यूटर विचारों की एकता पर पहुंचने में आपकी तथा आपके सह प्रतिभागियों की मदद करेंगे। अन्य अभ्यासों के लिये विचार–विमर्श महत्वपूर्ण है और किसी एक विशिष्ट उत्तर की अपेक्षा नहीं है। निम्नलिखित अभ्यास 3 प्रथम प्रकार का जबकि अभ्यास 6 दूसरे प्रकार का है।

1. सभी मानवीय सद्‌गुणों का आधार सत्यवादिता है। किन्हीं पाँच सद्‌गुणों के नाम लिखिए। ___

____

____

2. क्या हम सत्यवादिता के बिना इन गुणों को प्राप्त कर सकते हैं ? ____________________

____

3. निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं ?

_______ कोई व्यक्ति न्यायसंगत हो सकता है यद्यपि वह झूठ बोलता है।

_______ कोई जो चोरी करता है, उसका हाथ वफादार होता है।

_______ एक वफादार हाथ उस चीज को नहीं छूता जो उसकी नहीं है।

_______ अश्लील किताबें और पत्रिकाएँ पढ़ना बहाउल्लाह के इस परामर्श के विपरीत हैं कि हमें अपनी दृष्टि शुद्ध रखनी चाहिये।

_______ सत्यवादिता का अर्थ झूठ ना बोलना नहीं है।

_______ ईमानदारी आत्मा का आभूषण है।

_______ एक व्यक्ति जो सत्यनिष्ठ नहीं है आध्यात्मिक प्रगति कर सकता है।

_______ यदा–कदा झूठ बोलना ठीक है।

_______ यदि भूख लगी हो तो चोरी करना ईश्वर को स्वीकार्य है।

_______ कोई वस्तु उसके स्वामी से पूछे बिना यह सोच कर ले लेना कि हम बाद में इसे लौटा देंगे, चोरी नहीं है।

_______ जब हम ईमानदारी के साथ काम करते हैं, न्यायसंगत और सत्यनिष्ठ होते हैं तब हमारा ह्रदय प्रकाशित होता है।

_______ थोड़ी बेईमानी किए बगैर सफल व्यापार करना असंभव है।

4. क्या स्वयं से झूठ बोलना सम्भव है ? ______________________________

5. जब हम झूठ बोलते हैं तब हम क्या खो देते हैं ? ___________________________

____

6. यदि हम सब सत्यवादी और ईमानदार होते तो विश्व कैसा होता ? ____________________

____

____

____

भाग 5

निम्नलिखित उद्धरणों का अध्ययन करें और उन्हें हृदयगत करने का प्रयास करें। पवित्र लेखों के उद्धरणों को कंठस्थ करना अत्यन्त लाभदायक होता है और आपको ऐसा करने का हर सम्भव प्रयास करना चाहिये। निश्चित ही हर कोई उद्धरणों को आसानी से कंठस्थ नहीं कर सकता। तथापि प्रयास करने से हमारे हृदय व मानस पटल पर यह विचार उकेरने में तथा विचारों को यथासम्भव मूल पाठ के निकटतम शब्दों में व्यक्त करने में मदद मिलती है।

"एक विनम्र जिह्वा मानव–हृदय की चुंबक है। यह चेतना का आहार, यह शब्दों का अर्थरूपी वस्त्र, यह ज्ञान एवं समझ के प्रकाश की निर्झरनी है।"[11]

1. विनम्र वाणी का वर्णन किस प्रकार किया जा सकता है ? ____________________

____

____

____

2. शब्दों पर विनम्र वाणी का क्या प्रभाव पड़ता है ? ____________________

____

"ओ स्वामी के प्रिय ! इस पावन युगधर्म में संघर्ष और द्वेष की अनुमति कदापि नहीं दी गई है। प्रत्येक आक्रामक ईश्वर की कृपा से स्वयं को वंचित रखता है।"[12]

3. इस उद्धरण के अनुसार इस युगधर्म में क्या करने की अनुमति नहीं है ? ____________

____

4. आक्रामक अपने लिए क्या करता है ? ____________________

____

"इस दिवस में और कुछ भी नहीं प्रभुधर्म को उतनी हानि पहुँचा सकता जितना प्रभु के प्रिय पात्रों के मध्य विघटन और संघर्ष, विवाद, विरोध और उदासीनता।"[13]

5. कौन सी स्थितियाँ प्रभुधर्म को सर्वाधिक हानि पहुँचाती हैं ? ____________________

____

____

"मात्र शब्दों से ही मित्रता दिखाने से संतुष्ट ना हो, अपने हृदय में उन सभी के प्रति प्रेमपूर्ण दयालुता दिखलाओ जो तुम्हारी राह से गुजरते हों।"[14]

6. किस प्रकार की मित्रता से हमें सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए ? ____________________

____

7. हमारे हृदय में कैसी दयालुता होनी चाहिए ? ______________________________

____

"जब युद्ध का विचार आए, उसका विरोध शांति के एक प्रबल विचार से करो। घृणा के एक विचार को अवश्य ही प्रेम के एक शक्तिशाली विचार से नष्ट कर दो।"[15]

8. युद्ध के विचार का विरोध किससे करना चाहिए ? ______________________________

____

9. घृणा के विचार को किससे नष्ट करना चाहिए ? ______________________________

____

भाग 6

उपरोक्त उद्धरण को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित अभ्यास करें

1. चुम्बक के लिए दूसरा शब्द है "लौहमणि"। विनम्र वाणी किस प्रकार एक लौहमणि के समान कार्य करती है ? ______________________________

2. निर्णय करें कि क्या निम्नलिखित वाक्य विनम्र वाणी से निकले हैं ?

_______ "मुझे परेशान मत करो !"

_______ "तुम इसे क्यों नहीं समझते ?"

_______ "कृपया, क्या आप थोड़ा इन्तजार कर सकते हैं ?"

_______ "कितने शैतान बच्चे हैं !"

_______ "धन्यवाद! आप बहुत दयालु हैं।"

_______ "मेरे पास तुम्हारे लिए अभी बिल्कुल समय नहीं है ! मैं व्यस्त हूँ।"

3. निम्न किन परिस्थितियों में द्वंद और वैमनस्य विद्यमान है ?

_______ परामर्श के दौरान दो व्यक्ति किसी बिन्दु पर भिन्न विचार व्यक्त करते हैं।

_______ परामर्श के दौरान दो व्यक्ति नाराज होकर एक दूसरे से विवाद करते हैं।

_______ दो व्यक्ति साप्ताहिक प्रार्थना सभा में जाना बंद कर देते हैं क्योंकि उनकी आपस में बोलचाल बंद है।

_______ किसी प्रोजेक्ट पर कार्य करने वाले दल के सदस्य लगातार यह शिकायत करते हैं कि दूसरे अपना कर्तव्य नहीं निभा रहे हैं।

4. निम्न कौन सी परिस्थितियां उदासीनता के चिन्ह दर्शाती हैं ?

_______ दो मित्र सड़क पर सामने से गुजरते हैं पर एक दूसरे की उपेक्षा करते हैं।

_______ किसी के प्रार्थना सभा में आने पर सभी लोग उसका अभिवादन गर्मजोशी से करते हैं।

_______ एक दल के दो सदस्य यद्यपि एक दूसरे के प्रति शिष्टता दर्शाते हैं पर किसी प्रोजेक्ट पर साथ कार्य करने में कतराते हैं।

5. निर्णय करें कि क्या निम्नलिखित कथन सत्य हैं :

_______ दूसरों के बारे में हमें अपने विचार कह देने चाहिए, उनके दिलों पर चोट पहुँचने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

_______ संघर्ष से बचने के लिए झूठ बोलना ठीक है।

_______ प्रेम और सौजन्यता से संघर्ष दूर हो सकता है।

_______ स्नेह के साथ कहे गए शब्दों का अधिक प्रभाव पड़ता है।

_______ किसी से लड़ना उचित है यदि इसकी शुरूआत उसकी ओर से हुई हो।

_______ बीमार अथवा दुःखी होने पर व्यक्ति को दूसरों के साथ कठोर होने का अधिकार है।

_______ जब कोई गलती करे तो उस पर हँसना सौजन्यता नहीं है।

_______ जब मित्रों के बीच मनमुटाव हो तो दोनों को एक दूसरे के करीब आने का विशेष प्रयास करना चाहिए।

_______ जब मित्रों के बीच मनमुटाव हो तो प्रत्येक को तब तक प्रतीक्षा करनी चाहिए जब तक दूसरा व्यक्ति निकट आने का प्रयास नहीं करता।

भाग 7

निम्नलिखित उद्धरणों को पढ़ें और उन्हें कण्ठस्थ करें।

"... परनिन्दा हृदय के प्रकाश को बुझा देती है, और आत्मा के जीवन को समाप्त कर देती है।"[16]

"जब तक तू स्वयं पाप कर्म में लिप्त है, दूसरों के पापों का विचार भी न कर।"[17]

"अपशब्द न बोल ताकि स्वयं अपने लिए भी तुझे अपशब्द न सुनने पड़ें। दूसरे के दोषों को बढ़ा–चढ़ा कर न देख, कहीं तुम्हारी अपनी बुराई बढ़ी ना दिखे ।"[18]

"हे अस्तित्व के पुत्र ! तुम स्वयं के दोषों को भला कैसे भूल गये और दूसरों के दोष निकालने में तुमने अपने आप को क्यों व्यस्त कर लिया?"[19]

1. जो परनिन्दा करता है उस पर इसका क्या प्रभाव होता है ? ____________________

____

2. दूसरों के पापों के बारे में विचार करने से पहले हमें किस बात का ध्यान रखना चाहिए ? ___

____

3. यदि हम दूसरों के दोषों को बढ़ा–चढ़ा कर देखेंगे तो हम पर क्या प्रभाव होगा ? ________

____

4. दूसरों के दोषों के बारे में सोचते समय हमें क्या याद रखना चाहिए ? ________________

____

भाग 8

उपरोक्त उद्धरणों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित अभ्यासों को करें :

1. जो दूसरों के दोषों पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है उस व्यक्ति की आत्मा के विकास का क्या होता है ? ____________________________________

2. किसी समुदाय पर परनिन्दा का क्या प्रभाव पड़ता है ?__________________________

____

____

____

3. जब कोई मित्र किसी अन्य व्यक्ति के दोषों के बारे में बात करना शुरू करता है, तो आप क्या करते हैं ?____________________________________

____

4. निर्णय करें कि क्या निम्नलिखित कथन सही हैं :

_______ यदि हम किसी के वास्तविक दोषों के बारे में बात करते है तो हम परनिन्दा नहीं कर रहे होते हैं।

_______ यदि हम एक व्यक्ति के अच्छे गुणों के साथ–साथ उसके दोषों के बारे में भी बात करते हैं तो हम परनिन्दा नहीं कर रहे होते।

_______ परनिन्दा करना हमारे समाज का एक रिवाज बन गया है और इससे दूर रहने के लिए हमें अनुशासन का विकास करना चाहिए।

_______ यदि सुनने वाला वचन देता है कि जो हमने किसी के बारे में कहा, उसे किसी को बताएगा नहीं तो परनिन्दा करने में कोई हानि नहीं है।

_______ परनिन्दा एकता की सबसे बड़ी शत्रु है।

_______ यदि हम दूसरों के बारे में हर समय बात करने की आदत डाल लेंगे, तो हम आसानी से परनिन्दा करने के जाल में फंस जाएंगे।

_______ किसी कमेटी की सदस्यता तय करने के लिए जब स्थानीय आध्यात्मिक सभा की बैठक में विभिन्न व्यक्तियों की क्षमताओं पर विचार विमर्श किया जाता है तो इसे परनिन्दा करना कहते हैं।

_______ जब हमारे मन में परनिन्दा करने की इच्छा हो तो हमें पहले अपने दोषों को याद करना चाहिए।

_______ यदि हमें पता हो कि कोई व्यक्ति ऐसा काम कर रहा है जिससे प्रभुधर्म को हानि हो रही है, तो इसके बारे में हमें समुदाय के अन्य सदस्यों से इसकी चर्चा करनी चाहिए।

_______ यदि हमें पता हो कि कोई व्यक्ति ऐसा काम कर रहा है जिससे प्रभुधर्म को हानि हो रही है, तो इसके बारे में हमें केवल स्थानीय आध्यात्मिक सभा को सूचित करना चाहिए।

_______ विवाहित जोड़ों को दूसरों के दोषों के बारे में बातचीत करना गलत नहीं है क्योंकि उन्हें एक दूसरे से कुछ भी नहीं छिपाना चाहिए।

भाग 9

जैसा कि हमने प्रारम्भ में कहा था, इस इकाई का उद्देश्य प्रतिभागियों को पवित्र लेखों से उद्धरणों को प्रतिदिन पढ़ने तथा उनके अर्थ पर मनन करने की आदत को विकसित तथा प्रबलित करना है। ईश्वर के छंदों को प्रत्येक सुबह व शाम को पढ़ना हमारे आध्यात्मिक विकास के लिए उपयुक्त बहाउल्लाह की एक शिक्षा है। नीचे दिया गया उद्धरण हमें उन वदान्यताओं की याद दिलाता है जो हम इस अनिवार्यता को पूरा कर प्राप्त करते हैं और आपको इसे कंठस्थ करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता हैः

> **"स्वयं को मेरे "शब्दों के सार में निमग्न कर लो ताकि तुम इसके रहस्यों को उदघाटित कर सको, और विवेक के उन समस्त मोतियों को खोज सको जो इसकी गहराईयों में छिपे हैं।"**[20]

इस इकाई को पूर्ण कर लेने के बाद आप बहाउल्लाह की लेखनी की पुस्तक प्राप्त करना और इसे प्रतिदिन सुबह–शाम पढ़ना चाह सकते हैं। निगूढ़ वचन एक अच्छा प्रथम चुनाव है।

संदर्भ

1. बहाउल्लाह, दिव्य न्याय का अवतरण, पैरा 39
2. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 139, पैरा 8
3. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, अरबी से 31
4. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, फारसी से 5
5. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, फारसी से 69
6. अब्दुल बहा, दिव्य न्याय का अवतरण पैरा 40
7. अब्दुल बहा, दिव्य न्याय का अवतरण पैरा 40
8. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 136, पैरा 8
9. किताब–ए–अक़दस के पश्चात बहाउल्लाह द्वारा प्रकटित पाती से सं0 9.5
10. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 137, पैरा 3
11. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 132, पैरा 5
12. अब्दुल बहा का वसीयतनामा, पैरा 26
13. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 5, पैरा 5
14. अमृतवाणी से 16–17 अक्टूबर, 1911 सं. 1.7
15. अमृतवाणी से 21 अक्टूबर, 1911 सं. 6.7
16. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 125, पैरा 3
17. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, अरबी से 27
18. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, फारसी से 44
19. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, अरबी से 26
20. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 70, पैरा 2

प्रार्थना

उद्देश्य

प्रार्थना के महत्व पर मनन करना तथा नियमित प्रार्थना करने की आदत को प्रबलित करना

भाग 1

रुही संस्थान के पाठ्यक्रमों का अभिप्राय प्रतिभागियों को सेवा के पथ पर चलने में मदद करना है। हम इस पथ पर दोहरे उद्देश्य के बोध से प्रेरित हो आगे बढ़ते हैं – बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से विकास करने तथा समाज के रूपान्तरण में योगदान करने हेतु। हमारे उद्देश्य के यह दो पक्ष एक दूसरे से अविभाज्य हैं। एक उद्धरण में बहाउल्लाह हमारा आवाहन करते हैं :

"तुम स्वयं को अपने मामलों में ही व्यस्त ना रखो। अपने विचार उस ओर लगाओ जो मानव की आत्मा तथा हृदयों को पवित्र करेगा तथा मानवता के पथ को प्रशस्त करेगा।"[1]

दूसरे उद्धरण में, वह स्पष्ट करते हैं :

"जिस उद्देश्य के लिए नाशवान जनों ने, पूर्ण शून्यता से, अस्तित्व के इस जगत में कदम रखा है, वह यह है कि वे विश्व के उत्थान के लिए कार्य कर सकें और एक साथ समझौते एवं सामंजस्यता में रह सकें।"[2]

हमारी आंतरिक दशा के संबंध में वह घोषणा करते हैं :

"एक शुद्ध हृदय दर्पण के समान है, इसे प्रेम की चमक से साफ करो और ईश्वर के अतिरिक्त सभी कुछ से पृथक करो, जिससे सत्य का सूर्य इसमें चमके और शाश्वत प्रभात का उदय हो।"[3]

अब्दुल बहा हमें बताते हैं :

"तुम्हारे हृदय शुद्ध होने चाहिए और तुम्हारे आशय निष्कपट ताकि तुम दिव्य उपहारों के प्राप्तकर्ता बन सको।"[4]

1. हमारे विचारों और चिंताओं को किस पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए ? ____________

____

____

2. हमने किस उद्देश्य के लिए पूर्ण शून्यता से अस्तित्व के जगत में कदम रखा है ? ________

____

____

____

3. हमें अपने हृदय के दर्पण को किससे साफ करना चाहिए ? ____________________

____

4. दिव्य उपहारों के प्राप्तकर्ता बनने की कुछ आवश्यकताएँ क्या है ? ________________

____

5. क्या निम्न में से कोई सत्य है ?

- पहले स्वयं का ध्यान रखो और तब तुम दूसरों का ध्यान रख सकते हो।
- यदि आप सदैव दूसरों की ही मदद करते रहे तो आप अपने लक्ष्य को दृष्टि ओझल कर देंगे।
- आप स्वयं के निकटतम मित्र हैं।
- सबसे महत्वपूर्ण है यह जानना कि आप किस बात से प्रसन्न रहते हैं।
- अपने स्वप्नों का पीछा करो, वे ही आपको प्रसन्नता की ओर ले जाएंगे।
- कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या करते हैं, यदि आप अन्य किसी को चोट नहीं पहुंचा रहे।
- जब तक आप कुछ अच्छा कर रहे हैं, आपके आशयों का स्वार्थी होना ठीक है।

भाग 2

हमारे दोहरे उद्देश्य के केंद्र मेँ यह दृढ़ विश्वास है कि हम सभी को कुलीन उत्पन्न किया गया है। बहाउल्लाह कहते हैं :

> **"हे चेतना के पुत्र ! मैंने तुझे सम्पन्न बनाया है, फिर तू स्वयं को दरिद्रता के तल पर क्यों ला रहा है ? मैंने तुझे कुलीन बनाया है, फिर तू स्वयं को क्यों गिरा रहा है ? ज्ञान के सार से मैंने तुझे अस्तित्व दिया, फिर तू मेरे अतिरिक्त किसी अन्य से ज्ञान की खोज क्यों करता है ? प्रेम की माटी से मैंने तुझे गढ़ा, फिर तू किसी अन्य के साथ क्यों व्यस्त हो गया ? अपनी दृष्टि अपने अंदर डाल ताकि तू मुझ शक्तिशाली, सामर्थ्यमय तथा स्वःनिर्भर को अपने अंदर स्थित पा सके।"**[5]

नीचे रिक्त स्थानों को भरना आपको इस अनुच्छेद पर चिंतन करने में मदद करेगा।

"हे चेतना के पुत्र ! मैंने तुझे ____________ बनाया है, फिर तू स्वयं को ____________ पर क्यों ला रहा है ? मैंने तुझे ____________ बनाया है, फिर तू स्वयं को क्यों ____________ है ? ____________ को ____________ से मैंने तुझे अस्तित्व दिया, फिर तू ____________ अतिरिक्त किसी ____________ से ____________ की ____________ क्यों करता है ? ____________ की माटी से मैंने तुझे ____________ फिर तू किसी ____________ के साथ क्यों ____________ हो गया ? अपनी ____________ अपने ____________ डाल ताकि तू ____________ ____________ ____________ तथा ____________ को अपने अंदर स्थित पा सके।"

अपनी आत्माओं की कुलीनता के प्रति सत्य रहने के लिए, हमें अपने अस्तित्व के स्रोत की ओर अवश्य ही मुड़ना होगा और उससे ज्ञानबोध प्राप्त करना होगा। इसको प्राप्त करने का सर्वाधिक अकाट्य उपाय है प्रार्थना। धर्मसंरक्षक, शोगी एफेंदी हमें बताते हैं कि इसका मुख्य लक्ष्य "आध्यात्मिक गुण एवं शक्तियां प्राप्त कर व्यक्ति एवं समाज का विकास करना है। यह व्यक्ति की आत्मा है जिसको पहले भोजन कराना होता है। और यह आध्यात्मिक पोषण प्रार्थना ही सर्वोत्तम उपलब्ध करा सकती है।"[6]

भाग 3

ईश्वर सर्वज्ञाता, सर्वबुद्धिमान है। उसने हमें उत्पन्न किया तथा जानता है कि हमारे हृदय में क्या है और हमारे लिए सर्वोत्तम क्या है ? उसे हमारी प्रार्थनाओं की आवश्यकता नहीं है। तब हम प्रार्थना क्यों करते हैं ?

अब्दुल बहा कहते हैं :

"सर्वश्रेष्ठ प्रार्थना में मनुष्य मात्र ईश्वर से प्रेमवश प्रार्थना करता है न कि इसलिए कि वह उससे अथवा नरक से भयभीत है अथवा उसकी कृपा या स्वर्ग की उसे कामना है...... जब कोई किसी मनुष्य से प्रेम करने लगता है तो उसके लिए अपने मित्र के नाम का बारम्बार उच्चारण न करना असंभव हो जाता है। फिर जब कोई व्यक्ति ईश्वर से प्रेम करने लगे तो उसके नाम का उच्चारण न करना उसके लिए कितना अधिक कठिन होगा। आध्यात्मिक भाव से अभिभूत मानव ईश्वर के स्मरण के अतिरिक्त किसी भी वस्तु में सुख नहीं पाता।"[7]

एक प्रश्न के उत्तर में वह समझाते हैं :

"अगर कोई मित्र दूसरे से प्रेम करता है तो क्या यह स्वाभाविक नहीं कि उसे ऐसा कहने की इच्छा हो? यद्यपि वह जानता है कि उसका मित्र उसके प्रेम से अवगत है, फिर भी क्या उसे इसकी अभिव्यक्ति की इच्छा नहीं होती?.... यह सत्य है कि ईश्वर सभी के हृदयों की कामनाओं को जानता है, फिर भी प्रार्थना की अंतःप्रेरणा ईश्वर के लिए मनुष्य के प्रेम से उत्पन्न होती है।"[8]

1. निम्न वाक्यों को पूरा करें :

क. ____________________ प्रार्थना में हम मात्र ईश्वर से ____________________ ________________करते हैं न कि इसलिए कि हम उससे अथवा ________________ से भयभीत है अथवा उसकी ______________ या ______________ की कामना है

ख. जब हम किसी मनुष्य से ______________ करने लगते हैं तो हमारे लिए अपने ______________ के ______________ का बारम्बार उच्चारण न करना असंभव हो जाता है। फिर जब कोई व्यक्ति ईश्वर से ____________ करने लगे तो उसके नाम का ____________ न करना उसके लिए कितना अधिक ______________ होगा।

ग. आध्यात्मिक भाव से अभिभूत मानव ईश्वर के ____________ के अतिरिक्त किसी भी वस्तु में __________________ नहीं पाता।

2. हम प्रार्थना क्यों करते हैं ? ______________________________

____

3. "ईश्वर का स्मरण" का क्या अर्थ है ? ______________________________

____

4. दूसरे से प्रेम करने वाले व्यक्ति की सर्वाधिक हृदयी अभिलाषा क्या होती है ? ____________

____

5. प्रार्थना करने की अंतःप्रेरणा कहाँ से आती है ? ______________________________

____

भाग 4

बहाउल्लाह द्वारा प्रकटित एक प्रार्थना में हम पढ़ते हैं :

"मैं तुझसे याचना करता हूँ ... कि तू मेरी प्रार्थना को एक ऐसी ज्वाला बना दे जो उन पर्दों को जला दे जिसने तेरे सौन्दर्य से मुझे दूर किया है और एक ऐसी ज्योति जो मुझे तेरे सान्निध्य के सागर की ओर ले जाये।"[9]

इसी प्रार्थना में हम ईश्वर से मांगते हैं :

"हे मेरे स्वामी! मेरी प्रार्थना को, ऐसी जीवंत जलधारायें बना दे कि तब तक मैं जीवित रहूँ जब तक तेरा प्रभुत्व है और तेरे लोकों में से प्रत्येक लोक में तेरा उल्लेख करता रहूँ।"[10]

1. प्रार्थना किस रूप में ज्वाला के समान हो सकती है? वह किसको भस्म करती है ? _______

____

2. कुछ ऐसे पर्दों का उल्लेख करें जो हमें ईश्वर से दूर रखते हैं : ______________________________

____

3. क्या प्रार्थना ज्योति के समान हो सकती है ? वह हमें कहाँ ले जाती है ? ______________

____

4. क्या प्रार्थना जीवंत जलधारा हो सकती है ? वह हमारी आत्मा पर क्या अर्पित करती है ?

____

____

____

भाग 5

अब्दुल बहा के निम्नलिखित शब्दों का अध्ययन करें और उन पर मनन करें :

"अस्तित्व के संसार में प्रार्थना से अधिक मधुर कुछ भी नहीं है। मनुष्य अवश्य ही प्रार्थना की स्थिति में रहे । प्रार्थना और अनुनय की स्थिति सबसे आशीर्वादित स्थिति होती है। प्रार्थना ईश्वर से वार्तालाप है। सर्वोत्तम उपलब्धि अथवा सबसे मधुर स्थिति ईश्वर से वार्तालाप के अतिरिक्त दूसरी कोई नहीं है। यह आध्यात्मिकता का निर्माण करती है, सजग बनाती है और पावन भाव सृजित करती है, साम्राज्य के ओर नए आकर्षण उत्पन्न करती है और उच्च स्तर का बुद्धिकौशल धारण करने का बीजारोपण करती है।"[11]

1. अस्तित्व के संसार की सबसे मधुर स्थिति क्या है ? ______________________________

____

2. "प्रार्थना की स्थिति" का अर्थ क्या है ? ______________________________

____

____

3. प्रार्थना द्वारा उत्पन्न कुछ गुणों का उल्लेख करें : ______________________________

____

____

4. इन भागों में अपने द्वारा पढे गए उद्धरणों का पुनरवलोकन करें और प्रार्थना की प्रकृति पर पाँच वाक्य लिखें।

   – प्रार्थना ____

   – प्रार्थना ____

   – प्रार्थना ____

   – प्रार्थना ____

   – प्रार्थना ____

भाग 6

बहाउल्लाह के निम्नलिखित शब्दों का अध्ययन करें और उन पर मनन करें :

"हे मेरे सेवक, ईश्वर के उन पदों का सस्वर गान कर जो तुझे उसकी ओर से प्राप्त हुए हैं, जैसे उन लोगों द्वारा सस्वर गान किया गया था, जो ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त कर चुके है, ताकि तेरे स्वर का माधुर्य तेरी स्वयं की आत्मा को प्रकाशित कर दे और सभी मानवों के हृदयों को आकर्षित कर ले। अपने कक्ष के एकांत में ईश्वर द्वारा प्रकटित इन पदों का जो कोई भी सस्वर

पाठ करता है, उसके मुख से उच्चरित शब्दों की सुरभि सर्वशक्तिशाली ईश्वर के सर्वत्र विचरण कर रहे देवदूत दूर–दूर तक फैला देंगे और प्रत्येक सदाचारी मनुष्य के हृदय को स्पंदित कर देंगे, यद्यपि वह प्रारंभ में इसके प्रभाव से अनभिज्ञ रह सकता है, किन्तु समय रहते, ईश्वर की कृपा का प्रताप उसकी आत्मा पर इसका प्रभाव अवश्य डालेगा। इस प्रकार ईश्वर के प्रकटीकरण के रहस्य उसकी इच्छा के प्रभाव से आदेशित हैं, जो शक्ति और विवेक का स्रोत है।"[12]

1. "गान" करने का क्या अर्थ है ? ____________________

____

2. हमें ईश्वर के पदों का गान किस प्रकार करना चाहिए ? ____________________

____

____

____

3. "सस्वर" पाठ करने का क्या अर्थ है ? ____________________

____

4. "फैलाना" शब्द का क्या अर्थ है ? ____________________

____

5. हमारे स्वर के माधुर्य का हमारी अपनी आत्माओं पर क्या प्रभाव होगा ? ____________________

____

6. हमारे स्वर के माधुर्य का दूसरों की आत्माओं पर क्या प्रभाव होगा ? ____________________

____

____

भाग 7

बहाउल्लाह द्वारा प्रकटित प्रार्थना में से निम्न दो उद्धरणों को आप कंठस्थ करना चाह सकते हैं।

"हे ईश्वर, मेरे ईश्वर! मेरी आशाओं एवं मेरे कर्मों की ओर न देख, अपितु अपनी इच्छा की ओर दृष्टिपात कर जिसने धरती और आकाशों को आवृत किया हुआ है। तेरे सर्व महान नाम से, हे समस्त राष्ट्रों के स्वामी! मैंने केवल उसी की इच्छा की है जो तेरी इच्छा है, और उसी से प्रेम किया है जिसे तू प्रेम करता है।"[13]

"तू अपने निकटस्थ जनों की स्तुति से इतना उच्च है कि वे तेरी निकटताओं के स्वर्ग तक नहीं पहुँच सकते, या जो तेरे प्रति समर्पित हैं उनके हृदय के पक्षी तेरे द्वार को नहीं पा सकते। मैं साक्षी देता हूँ कि तू समस्त गुणों से परे और समस्त नामों से पावन है। तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है, परम उच्च, सर्व महिमामय।"[14]

भाग 8

अब्दुल बहा कहते हैं :

"सेवक के लिए यह उचित है कि ईश्वर की सहायता के लिए प्रार्थना करे, और उसकी सहायता के लिए अनुनय तथा याचना करे। ऐसा करना दासत्व की श्रेणी है, और वह स्वामी वह देगा जो बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण उसकी इच्छा होगी।[15]

और वह समझाते हैं :

"चेतना का प्रभाव है; प्रार्थना का आध्यात्मिक प्रभाव है। इसलिए हम प्रार्थना करते हैं, 'हे ईश्वर! इस रोगी को आरोग्य प्रदान कर!' कदाचित ईश्वर उत्तर देगा। क्या फर्क पड़ता है कि कौन प्रार्थना कर रहा है ? ईश्वर अपने प्रत्येक सेवक की प्रार्थना का उत्तर देगा यदि वह प्रार्थना अत्यावश्यक है। उसकी दया विस्तृत है, अकल्पनीय है। वह अपने सभी सेवकों की प्रार्थनाओं का प्रत्युत्तर देता है। वह इस पौधे की प्रार्थना का भी उत्तर देता है। पौधे संभावित प्रार्थना करते हैं, हे ईश्वर वर्षा भेजो! ईश्वर प्रार्थना का उत्तर देता है, और पौधे बढ़ते हैं। ईश्वर किसी को भी उत्तर देगा।"[16]

यह स्वाभाविक ही है कि हमारी प्रार्थनाओं में हम ईश्वर से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने को कहेंगे। अतः हम अपने स्वास्थ्य तथा अपने प्रिय जनों के स्वास्थ्य की प्रार्थना करते हैं, हम अपने परिवार के आध्यात्मिक और भौतिक विकास के लिए प्रार्थना करते हैं, और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना करते हैं। हम शक्ति, आस्था, और सेवा के पथ पर संपुष्टि के लिए प्रार्थना करते हैं। ईश्वर से प्रार्थना करते समय, निश्चित ही हमें याद रखना चाहिए कि हमारा लक्ष्य अपनी इच्छा को ईश्वर की इच्छा में मिलाना है। अतः हमें उसकी इच्छा पूर्ति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और इस पर समर्पण के लिए तैयार रहना चाहिए। यदि आप अब्दुल बहा के निम्न शब्दों को कंठस्थ करें तो वे सदैव आपके लिए आनंद तथा आश्वासन का स्रोत रहेंगे।

"हे तुम, जो परमेश्वर की ओर उन्मुख हो रहे हो ! अपने नेत्र अन्य सभी वस्तुओं के प्रति मूंद लो और उस सर्वमहिमामय के साम्राज्य के प्रति उन्हें खोल लो। जो कुछ भी तुम्हारी कामना हो, केवल एक उसी से मांगो, जो कुछ भी तुम पाना चाहो, केवल उसी से याचना करो। एक बार दृष्टि डालते ही वह लाखों आशाओं की पूर्ति करता है, एक ही कृपा–दृष्टि से वह लाखों असाध्य रोगों का निवारण करता है, एक नज़र से ही वह हर घाव पर शीतल मरहम लगा देता है, एक संकेत मात्र से ही वह शोक की बेड़ियों से हृदयों को सदा के लिए मुक्त कर देता है। वह जो करता है, करता है और हमारे पास कौन–सा उपाय है ? जो उसकी इच्छा होती है वह उसे पूरा करता है, जो उसे प्रिय होता है वह वैसा ही विधान करता है? तब तुम्हारे लिए यही श्रेष्ठ है कि तुम उसकी अधीनता में अपना सर झुका लो और सर्वदयामय प्रभु में सम्पूर्ण भरोसा रखो।"[17]

भाग 9

अब तक हमने जो भी अध्ययन किया है, उससे यह स्पष्ट है कि आध्यात्मिक जीवन की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता ईश्वर की ओर मुड़ना है। विशेषकर कितना मधुर होगा यह कि सुबह उठकर जल्द ही और रात में सोने से पहले ईश्वर से प्रार्थना करें। प्रतिदिन प्रार्थना में बिताया जाने वाला समय और की गयी प्रार्थनाओं की संख्या हमारी आवश्यकताओं और आध्यात्मिक प्यास पर निर्भर करता है। प्रत्येक

अवसर हेतु हम बहाउल्लाह, बाब और अब्दुल बहा द्वारा प्रकटित अनेक प्रार्थनाओं से चुन सकते हैं। बहाउल्लाह ने तीन दैनिक अनिवार्य प्रार्थनाएँ भी प्रकट की हैं। शोगी अफेन्दी कहते हैं :

> **"दैनिक अनिवार्य प्रार्थनाओं की संख्या तीन है। सबसे छोटी प्रार्थना एक पद की है जो चौबीस घंटे में एक बार दोपहर से शाम के बीच की जानी चाहिए। मध्यम अनिवार्य प्रार्थना जो इन शब्दों के साथ प्रारंभ होती है 'ईश्वर साक्षी है कि तेरे अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं है,' दिन में तीन बार सुबह, दोपहर और शाम को की जानी चाहिए। यह प्रार्थना कुछ भौतिक क्रियाकलापों और हावभाव के साथ सम्बद्ध है। लम्बी अनिवार्य प्रार्थना, जो तीनों में सबसे अधिक विस्तृत है, चौबीस घंटों में एक बार अपनी सुविधा एवं इच्छा से की जानी चाहिए।**
>
> **"अनुयायी इन तीनों में से कोई भी एक प्रार्थना चुनने के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र है किन्तु उनमें से कोई भी एक प्रार्थना पढ़ना और साथ ही खास दिशा की ओर उन्मुख होकर इसे किया जाता है।"[18]**

वह आगे कहते हैं :

> **"इन दैनिक अनिवार्य प्रार्थनाओं, साथ ही कुछ अन्य खास प्रार्थनायें जैसे आरोग्य के लिए प्रार्थना, अहमद की पाती को बहाउल्लाह ने विशेष शक्ति और महत्व के साथ प्रकट किया है और इन्हें इसी रूप में स्वीकारा जाना चाहिए तथा अनुयायियों को इन्हें असंदिग्ध आस्था और विश्वास के साथ पढ़ना चाहिए, ताकि इनके द्वारा वे ईश्वर के साथ एक निकट सम्वाद की स्थिति स्थापित करें और उसके विधानों और विचारों के साथ अपनी पहचान बनायें।"[19]**

बहाउल्लाह द्वारा प्रकटित तीन अनिवार्य प्रार्थनाएँ प्रत्येक द्वारा स्वयं की जाती हैं। सामूहिक प्रार्थना, जहाँ एक अनिवार्य प्रार्थना कुछ निश्चित कर्म कांडों के साथ समूह में की जाती है, बहाई धर्म में नहीं है। बहाई नियमों के अनुसार, दिवंगतों के लिए प्रार्थना ही एक मात्र समूहिक प्रार्थना का प्रावधान है। समाहित करने से पूर्व वहाँ उपस्थित जनों में से कोई भी एक इस प्रार्थना का पाठ करता है तथा समूह के बाकी जन शांत खड़े रहते हैं।

1. अनिवार्य का क्या अर्थ है ? ____________________

____

2. बहाउल्लाह ने कितनी दैनिक अनिवार्य प्रार्थनाएँ प्रकट की है ? ____________________

____

3. क्या हमें प्रतिदिन तीनों अनिवार्य प्रार्थनाओं का पाठ करना चाहिए ? ____________________

4. यदि हम लम्बी अनिवार्य प्रार्थना का चयन करते हैं, तो इसका पाठ हमें प्रतिदिन कितनी बार करना चाहिए ? ____________________

5. कितनी बार, यदि हम मध्यम अनिवार्य प्रार्थना का चयन करते हैं ? ____________________

6. कितनी बार, यदि हम लघु अनिवार्य प्रार्थना का चयन करते हैं ? ____________________

7. ऐसी कुछ प्रार्थनाओं के नाम बताएँ जिनमें विशेष शक्ति होती है ? ____________________

____

____

8. यदि अभी तक नहीं किया है तो लघु अनिवार्य प्रार्थना को कंठस्थ करें :

"मैं साक्षी देता हूँ, हे मेरे ईश्वर, कि तुझे जानने और तेरी आराधना करने हेतु तूने मुझे उत्पन्न किया है। मैं इस क्षण अपनी शक्तिहीनता और तेरी शक्तिमानता, अपनी दरिद्रता तथा तेरी सम्पन्न्ता का साक्षी हूँ।

"तेरी अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं, तू ही है संकटों में सहायक, स्वयंजीवी।"[20]

9. इस प्रार्थना में हम क्या साक्षी देते हैं ? ____

____

____

____

भाग 10

हमें याद रखना चाहिए कि अनिवार्य प्रार्थना के नियम का पालन करने से प्राप्त आशीर्वादों तथा अन्य प्रार्थनाओं को अकेले करने से प्राप्त पोषण के अतिरिक्त, जब हम प्रार्थनाओं का गान, छोटी या बड़ी सभाओं में सुनते हैं तो हमारी आत्माएँ उल्लसित होती हैं। बहाउल्लाह हमें बताते हैं :

"तुम परम आनन्द और भ्रातभाव के साथ एकत्रित हो और दयालु ईश्वर द्वारा प्रकट श्लोकों का पाठ करो। ऐसा करने से सत्य ज्ञान के द्वार तुम्हारे अंर्ततम में खुल जायेंगे, और तब तुम अपनी आत्माओं को दृढ़ता से आभूषित और अपने ह्रदयों को उज्जवल आनंद से भरा महसूस करोगे।"[21]

हम सभी इस बात से अत्यंत आनंद प्राप्त करते हैं कि पूरे विश्व में प्रार्थना सभाएं जिसमें मित्र और पड़ोसी ईश्वर से संसर्ग करने में भाग लेते हैं, हजारों की संख्या में बढ़ रही हैं। विश्व न्याय मंदिर लिखते हैं।

"भक्तिपरक बैठकं वे अवसर हैं जहाँ कोई भी आत्मा प्रवेश कर सकती है, स्वर्गिक सुगंधों की सांस ले सकती है, प्रार्थना की मधुरता का अनुभव कर सकती है, 'सर्जनात्मक' शब्द पर चिंतन कर सकती है, चेतना के पंखों पर उड़ सकती है, अपने 'प्रियतम' से संवाद कर सकती है। भ्रातभाव एवं साझा कार्यों की भावनायें उत्पन्न होती हैं, विशेषकर आध्यात्मिक उच्च्य वार्तालाप में जो स्वाभाविक रूप से ऐसे समय उत्पन्न होती है और जिनके द्वारा 'मानव ह्रदय रूपी नगर' खोले जा सकते हैं।"[22]

जब हमारा प्रार्थना करने का मन करे, हम शांति से एक क्षण इंतजार करते हैं ताकि अपने मन को वैश्विक बातों से विलग कर सकें। प्रार्थना करते समय, हम अपने विचारों को ईश्वर पर केन्द्रित करते हैं। प्रार्थना करने के बाद हम कुछ देर तक शांत रहते हैं और दूसरी गतिविधि में तुरंत नहीं लग जाते। ऐसा ही तब होता है जब हम सभा में दूसरों द्वारा की गई प्रार्थना को सुनते हैं। ऐसे अवसरों पर हम

प्रार्थनामय अभिवृत्ति बनाए रखते हैं और शब्दों का समीपता से अनुसरण करते हैं, जैसे कि हम ही उनका पाठ कर रहे हों।

1. जब हम ईश्वर के छंदों का पाठ कर रहे हों तो किस चेतना के साथ हमें एक साथ एकत्र होना चाहिए ? ____________________

____

2. ईश्वर के छंदों का पाठ करने के लिए हमारे एक साथ एकत्र होने का क्या प्रभाव होगा ? ___

____

____

____

3. प्रार्थना सभाएं वह अवसर हैं जहां कोई आत्मा

– __________ ,

– ____________________ ,

– ____________________ ,

– ____________________ ,

– ____________________ , और

– ____________________.

4. प्रार्थना सभाओं में कैसी भावनाएँ उत्पन्न होती हैं ? ____________________

____

5. प्रार्थना सभाओं में स्वाभाविक ही उत्पन्न आध्यात्मिक रूप से उत्कृष्ट वार्तालाप का क्या प्रभाव होता है ? ____________________

____

6. अकेले अथवा समूह में प्रार्थना करते समय हमारे द्वारा जो आदरपूर्ण अभिवृत्ति दर्शाई जानी चाहिए, उस पर कुछ शब्द लिखें।

____

____

____

____

____

भाग 11

पुस्तक की पहली इकाई ने पवित्र लेखनी से उद्धरणों को प्रतिदिन पढ़ने और उन पर विचार करने की आदत पर ध्यान केन्द्रित किया। यहाँ पर आपने प्रार्थना की महत्ता पर चिंतन किया है, परिणाम स्वरूप प्रतिदिन प्रार्थना करने की आदत को प्रबलित किया है। पिछले भाग ने सामुदायिक उपासना के महत्व पर आपका ध्यान आकर्षित किया। अभी तक जो आपने पढ़ा, उसने आपको तैयार कर दिया है, तो यदि आप चाहें, तो सेवा का पहला कदम उठा सकते हैंः एक प्रार्थना सभा का आयोजन कर।

पहले कदम के रूप में, आप अनेक प्रार्थनाएँ याद कर सकते हैं और अपने मित्रों के साथ उन्हें बांटने का अवसर पा सकते हैं। साथ ही यह भी सुनिश्चित कर सकते हैं कि आप अपने समुदाय में कम से कम एक प्रार्थना सभा में भाग लें तथा इसके उत्साही समर्थकों में गिने जाएँ। अंततः अपने मित्रों, परिवार के सदस्यों तथा पड़ोसियों को प्रार्थना तथा मेल जोल के लिए नियमित आमंत्रित कर, तब, आप स्वयं प्रार्थना सभा का आयोजन करना तय कर सकते हैं। इस पाठ्यक्रम के दो या तीन प्रतिभागियों के लिए एक साथ इस प्रकार की प्रार्थना सभा आयोजित करना असामान्य नहीं है।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, प्रार्थना सभा का आयोजन करने के लिए कोई फॉर्मूला नहीं है। पर यह निश्चित रूप से मित्रों का एकत्र होना है जिसमें प्रार्थनाएँ की जाती हैं, पवित्र लेखों से उद्धरणों को पढ़ा जाता है, उत्कृष्ट वार्तालाप होता है, सभी कुछ एक विशिष्ट आध्यात्मिक वातावरण में। क्या आप प्रार्थना सभा की पृष्ठभूमि में, निम्न विचारों पर कुछ शब्द कह सकते हैं ?

गर्मजोशी तथा प्रेमपूर्ण आमंत्रण :

स्वागत योग्य वातावरण निर्माण करना :

श्रद्धापूर्ण वातावरण बनाए रखना :

आनंदपूर्ण सहचर्य को बढ़ावा देना : ____________________

____

____

____

आध्यात्मिक रूप से उत्कृष्ट वार्तालाप को प्रोत्साहित करना : ____________________

____

____

____

संदर्भ

1. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 43, पैरा 4
2. बहाउल्लाह, विश्वासपात्रता में सं. 21
3. दिव्य प्रियतम की पुकार, सं. 2.43
4. प्रोमलगेशन ऑफ यूनीवर्सल पीस, पेज. 127
5. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, अरबी से 13
6. शोगी एफेंदी की ओर से लिखे पत्र 8 दिसम्बर 1935 से
7. बहाउल्लाह एंड न्यू इरा : बहाई धर्म का परिचय
8. बहाउल्लाह एंड न्यू इरा : बहाई धर्म का परिचय
9. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनायें, पेज 7–8
10. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनायें, पेज 9
11. अब्दुल बहा, स्टार आफ द वेस्ट, पेज सं. 41
12. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 136, पैरा 2
13. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनायें, पेज 8–9
14. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनायें, पेज 12
15. अब्दुल बहा, प्रार्थना एवं भक्तिमय जीवन, सं. 24
16. अब्दुल बहा, प्रोमलगेशन आफ यूनीवर्सल पीस, पेज सं. 345
17. अब्दुल बहा के लेखों से चयन, पेज. 75–76
18. शोगी एफेंदी द्वारा 10 जनवरी 1936 लिखे गए पत्र से, प्रार्थना एवं भक्तिमय जीवन, सं. 61
19. शोगी एफेंदी द्वारा 10 जनवरी 1936 लिखे गए पत्र से, प्रार्थना एवं भक्तिमय जीवन, पेज सं0 301
20. बहाउल्लाह, बहाई प्रार्थनायें, पेज 4
21. बहाउल्लाह, प्रार्थना एवं भक्तिमय जीवन, सं. 68
22. विश्व न्याय मंदिर का पत्र, 29 दिसम्बर 2015 से सं0 35.49

जीवन और मृत्यु

उद्देश्य

यह सराहना कि जीवन इस संसार के महज संयोगों और परिवर्तनों से निर्मित नहीं है, बल्कि आत्मा के विकास में अपनी सच्ची सार्थकता पाता है।

भाग 1

मानव आत्मा पदार्थ और इस भौतिक दुनिया से ऊपर है। अपने एक भाषण में, अब्दुल बहा स्पष्ट करते हैं

> **"यह भौतिक शरीर अणुओं से निर्मित हैं। जब ये अणु बिखरने लगते हैं तो पृथकीकरण आरम्भ हो जाता है, तब उसका आगमन होता है जिसे हम मृत्यु कहते हैं..... "**

> **"आत्मा की लिए बात अलग है। आत्मा तत्वों का संयोजन नहीं है। यह अनेक तत्वों से मिलकर नहीं बनती, यह एक ही अविभाज्य तत्व से बनती है और इसलिये अनन्त है। भौतिक सृष्टि के दायरे से यह बिल्कुल परे है। यह अनश्वर होती है।"[1]**

1. निर्मित का क्या अर्थ है ? ____________________

2. क्या मानव आत्मा भौतिक शरीरों की भांति विभिन्न तत्वों से बनी है ? ____________________

3. क्या मानव आत्मा एक भौतिक अस्तित्व है ? ____________________

भाग 2

संरक्षक की ओर से लिखा गया एक पत्र बताता है कि "मानव की आत्मा गर्भधारण के समय अस्तित्व में आती है।"[2] "गर्भधारण" के अर्थ के बारे में एक प्रश्न का जवाब देते हुए विश्व न्याय मंदिर बताते हैं :

> **"बहाई लेखों में ऐसा कुछ भी नहीं मिला है जो 'गर्भधारण' नामक इस जैविक घटना और इसकी प्रकृति को सटीक परिभाषित करता हो। चिकित्सा संदर्भ में भी इस शब्द का उपयोग सटीक प्रतीत नहीं होता। वास्तव में, गर्भधारण की एक समझ यह है कि यह निषेचन से संपाती होता है; दूसरी यह है कि यह निषेचन और आरोपण, गर्भावस्था के प्रारम्भ के बाद होता है। इस प्रकार, यह जानना संभव नहीं हो सकता कि भौतिक रूप से आत्मा का संबंध कब होता है, और इस तरह के प्रश्न मानव विचार या खोज से परे हो सकते हैं क्योंकि वे आध्यात्मिक लोक के रहस्यों और स्वयं आत्मा की प्रकृति से संबंधित हैं।"[3]**

1. मानव आत्मा कब अस्तित्व में आती है ? ____________________

____

2. क्या शब्द "गर्भधारण" एक सटीक जैविक क्षण का वर्णन करता है ? ____________________

भाग 3

आत्मा और शरीर का संबंध भौतिक नहीं है; आत्मा शरीर में प्रवेश अथवा निर्गम नहीं करती और भौतिक स्थान नहीं घेरती है। शरीर के साथ इसका संबंध प्रकाश का दर्पण के साथ सम्बंध के समान है

जो इसे प्रतिबिंबित करता है। दर्पण में दिखाई देने वाला प्रकाश इसके भीतर नहीं होता। इसी प्रकार, आत्मा शरीर के भीतर नहीं है। अब्दुल बहा बताते हैं,

> **"विवेकशील आत्मा या मानव चेतना अन्तर्निष्ठ होकर देह के माध्यम से निर्वाह नहीं करती है– कहने का तात्पर्य यह कि वह उसमें प्रवेश नहीं करती है, क्योंकि अन्तर्निष्ठता एवं प्रवेश देह के लक्षण हैं, और विवेकशील आत्मा इस सबसे ऊपर निर्मल है। अपना जीवन आरम्भ करने के लिए उसने इस देह में कभी प्रवेश नहीं किया, कि उसे देह छोड़ने पर किसी अन्य घर की आवश्यकता हो। देह के साथ आत्मा का सम्बन्ध किसी दर्पण के साथ दीपक के सम्बन्ध जैसा ही होता है। दर्पण अगर चमकीला और परिष्कृत है तो दीपक का प्रकाश उसमें दिखाई देता है, और दर्पण अगर टूटता या धूल से आच्छादित है तो प्रकाश छिपा रहता है।"[4]**

1. नीचे दिए गए वाक्यों में रिक्त स्थान भरें।

   क. विवेकशील आत्मा या __________________ अन्तर्निष्ठ होकर देह के माध्यम से निर्वाह नहीं करती है– कहने का तात्पर्य यह कि आत्मा __________________ नहीं करती।

   ख. ______________________या मानव चेतना इस देह में अन्तर्निष्ठ रहकर देह के माध्यम से निर्वाह नहीं करती है– कहने का तात्पर्य यह कि वह उसमें प्रवेश नहीं करती, क्योंकि अन्तर्निष्ठता एवं प्रवेश देह के लक्षण हैं, और विवेकशील आत्मा इन सबसे __________________ है।

   ग. अपना जीवन आरम्भ करने के लिए उसने ____________________ में कभी प्रवेश नहीं किया, कि उसे देह छोड़ने पर किसी _________________ की आवश्यकता हो।

   घ. देह के साथ आत्मा का सम्बन्ध ________________ के सम्बन्ध जैसा ही होता है।

   ङ. दर्पण अगर चमकीला और परिष्कृत है तो _________________________________ उसमें दिखाई देता है।

   च. दर्पण अगर टूटता या धूल से आच्छादित है तो __________________ ____________ है।

2. हमने अभी तक जो भी अध्ययन किया है, उसके आधार पर, यह निर्धारित करें कि क्या निम्नलिखित सत्य हैं :

   _______आत्मा भौतिक जगत से संबंधित नहीं है।

   _______आत्मा शरीर के भीतर है।

   _______शरीर आत्मा का स्वामी है।

   _______आत्मा अमर है।

   _______व्यक्ति का स्वयं का प्रारम्भ तब होता है जब आत्मा खुद को भ्रूण से जोड़ती है।

_______ जीवन का प्रारम्भ तब होता है जब व्यक्ति इस दुनिया में जन्म लेता है।

_______ व्यक्ति का भौतिक अस्तित्व मृत्यु के बाद जारी रहता है।

_______ जीवन में हर दिन हमारे साथ होने वाली घटनाओं से बनता है।

3. आत्मा और शरीर के बीच संबंध का वर्णन करने के लिए एक प्रकाश और एक दर्पण की छवि का उपयोग करें : ____

____

____

____

____

भाग 4

आत्मा और शरीर के बीच एक बहुत ही खास सम्बंध होता है, जो एक साथ मिलकर मनुष्य का निर्माण करते हैं। यह सम्बंध केवल एक नश्वर जीवन की अवधि तक रहता है। जब उनके बीच संबंध समाप्त हो जाता है, तो प्रत्येक अपने मूल में लौट जाता है – शरीर धूल की इस दुनिया में और आत्मा परमात्मा की आध्यात्मिक दुनिया में, जहां यह प्रगति जारी रखती है। अब्दुल बहा कहते है :

"मानव चेतना का आदि तो है पर अन्त नहीं है। यह सदा–सर्वदा बनी रहती है।"[5]

अपने एक भाषण में, उन्होंने स्पष्ट किया :

"चेतना को शरीर की आवश्यकता नहीं होती परन्तु शरीर को चेतना की आवश्यकता होती है, अन्यथा यह जीवित नहीं रह सकता। आत्मा बिना शरीर के जीवित रह सकती है परन्तु आत्मा के बिना शरीर मर जाता है।"[6]

और संरक्षक बताते हैं :

"मानव की आत्मा के सम्बन्ध मेंः बहाई शिक्षाओं के अनुसार मानवात्मा मानव भ्रूण के निर्माण के साथ अपना जीवन प्रारम्भ करती है और विकास करती रहती है तथा शरीर से अलग होने के पश्चात अस्तित्व की अन्तहीन अवस्थाओं से गुजरती है। इस प्रकार उसकी प्रगति असीम होती है।"[7]

1. उपरोक्त उद्धरणों को ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :

   क. क्या शरीर को आत्मा की आवश्यकता है ? ______________________

   ख. क्या आत्मा को शरीर की आवश्यकता है ? ______________________

ग. जब हम मर जाते हैं तो शरीर और आत्मा के बीच संबंध का क्या होता है ? ________

____

घ. मृत्यु के बाद आत्मा का क्या होता है ? ________________________

____

ङ. आत्मा की प्रगति कितने समय तक चलती है ? ____________________

____

च. जीवन कब समाप्त होता है ? ____________________________

____

2. इन भागों में हमने जो अध्ययन किया है, उसके अनुसार निम्नलिखित में से कौन से अनुरूप हैं :

_______ मृत्यु एक सजा है।

_______ देह और आत्मा के बीच संबंध केवल एक नश्वर जीवन की अवधि तक रहता है।

_______ देह शाश्वत प्रगति के लिए सक्षम है।

_______ आत्मा सदैव प्रगति करेगी।

_______ मृत्यु जीवन का अंत है।

_______ न्याय का एक दिन होगा जब हमारी देह उठ खड़ी होंगी।

_______ मृत्यु के बाद, आत्मा पहले की तुलना में अधिक स्वतंत्र होती है।

_______ जीवन मृत्यु के साथ समाप्त होता है।

_______ हमें मृत्यु से डरना चाहिए।

_______ आत्मा के लिए भोजन, कपड़े, आराम और मनोरंजन आवश्यक है।

_______ आत्मा थक जाती है क्योंकि देह इसकी ऊर्जा का उपयोग कर लेती है।

_______ आत्मा शरीर की बीमारी या कमजोरी से प्रभावित नहीं होती है।

_______ मनुष्य को मृत्यु के बाद भी शारीरिक आवश्यकताएँ होंगी।

भाग 5

हमने देखा है कि आत्मा भौतिक स्थान नहीं घेरती है और प्रकृति के नियमों के अनुसार काम नहीं करती है, जैसा कि भौतिक वस्तुयें करती हैं। आत्मा शरीर की एजेंसी के माध्यम से दुनिया में प्रभाव डालती है, लेकिन यह एकमात्र साधन नहीं है जिसके माध्यम से आत्मा अपनी शक्ति का उपयोग करती है। बहाउल्लाह घोषित करते हैं :

"वस्तुतः मैं कहता हूँ, मनुष्य की आत्मा आवा–गमन से परे है। यह स्थिर है, फिर भी उड़ान भरती है। यह चलायमान है फिर भी स्थिर है।"[8]

और अब्दुल बहा हमें बताते हैं :

"यह जान लो कि मानव चेतना का प्रभाव तथा बोध दो प्रकार का होता है, अर्थात् मानव चेतना के पास क्रिया और समझ की दो विधियाँ हैं। एक विधि है देहिक अंगों तथा उपकरणों की मध्यस्थता के माध्यम से कार्य करना। इसमें वह नेत्र से देखती है, कान से सुनती है, जिह्वा से बोलती है...

"दूसरी विधि में चेतना का प्रभाव तथा कार्य इन देहिक अंगों एवं उपकरणों के बिना ही सम्पन्न होता है।"[9]

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान भरें :

   क. मानव आत्मा सभी ______________ से परे है।

   ख. यह ______________ है, और फिर भी ______________ है।

   ग. यह ______________ है, और फिर भी ______________ है।

2. उन दो विधियों का वर्णन करें जिनके माध्यम से आत्मा इस दुनिया में प्रभाव डालती है और बोध करती है : ______________________________

   ____

   ____

   ____

3. क्या आप देहिक उपकरणों के बिना आत्मा के प्रभाव और कार्य के उदाहरण दे सकते हैं ?

   ____

   ____

   ____

   ____

भाग 6

अब, पूर्ववर्ती भागों में हुई चर्चा के प्रकाश में, बहाउल्लाह के लेखों से निम्नलिखित अनुच्छेदों को पढ़ें :

"तुम यह जानो कि मनुष्य की आत्मा इस सबसे परे और शरीर तथा मस्तिष्क की समस्त कमजोरियों से स्वतंत्र है। आत्मा और देह के मध्य उत्पन्न बाधाओं के कारण रोगी में कमजोरियां दिखलाई देंगी परंतु उसकी आत्मा पर इस बीमारी का कोई प्रभाव नहीं होता। दीपक के प्रकाश के सम्बंध में विचार करो। किसी बाह्य अवरोध से इसकी चमक बाधित हो सकती है, किन्तु इसका आंतरिक प्रकाश अप्रभावित रहता है। मनुष्य की देह को पीड़ा देने वाली कोई भी व्याधि ऐसी बाधा है जो आत्मा को अपनी अंतर्निहित शक्ति की क्षमता को प्रकट करने से रोक देती है और इसका स्पष्ट प्रमाण शरीर की दीप्ति समाप्त होने से मिलता है, लेकिन आत्मा की शक्ति और तेजस्विता पूर्ववत बनी रहती हैं। जब आत्मा देह का त्याग करती है तब यह ऐसी शक्ति प्राप्त कर लेती है और ऐसा प्रभाव डालती है जिसकी बराबरी धरती की कोई शक्ति नहीं कर सकती। प्रत्येक शुद्ध तथा पवित्र आत्मा अभूतपूर्व शक्ति से सम्पन्न होगी और अत्यधिक प्रसन्नता से आनंदित होगी।"[10]

1. अपने स्वयं के शब्दों में बताएं कि शरीर या मन की कमजोरियों से आत्मा कैसे अप्रभावित रहती है, और शरीर से अलग होने पर क्या स्पष्ट किया जाएगा।

____
____
____
____
____
____
____
____
____

2. क्या हम अपने भौतिक शरीर की मृत्यु के बाद अपना व्यक्तित्व बनाए रखेंगे ? ____________

भाग 7

बहाउल्लाह हमें बताते हैं :

"और अब आत्मा के देहविसर्जन के पश्चात जीवित रहने के तुम्हारे प्रश्न के सम्बंध में। तुम इस सत्य को जानो कि देह से अलग होने के पश्चात आत्मा तब तक प्रगति करती रहेगी जब तक वह ईश्वर से एक ऐसी अवस्था में मिलन को नहीं प्राप्त कर लेती जिसे युगों और सदियों के चक्र एवं इस लोक के परिवर्तन और संयोग भी बदल नहीं सकते। यह तब तक अमर रहेगी

जब तक ईश्वर का साम्राज्य, उसकी सार्वभौमिकता और उसकी शक्ति है। यह ईश्वर के चिन्हों और गुणों को प्रकट करेगी और उसकी प्रेममयी कृपा तथा आशीषों का संवहन करेगी।"[11]

1. शारीरिक मृत्यु के बाद आत्मा कब तक प्रगति करती रहेगी ? ________________________

2. किस अवस्था में आत्मा ईश्वर की उपस्थिति की ओर अपनी अनन्त यात्रा जारी रखेगी ?
____
____
____

3. आत्मा और उस अवस्था में प्रकट होने वाले चिन्ह और गुण क्या हैं ? ________________
____
____

4. हमने अब तक जो भी अध्ययन किया है, उसके आधार पर, यह निर्धारित करें कि क्या निम्नलिखित सत्य हैं :

_______ ईश्वर का साम्राज्य सदा सर्वदा बना रहेगा।

_______ आत्मा में ईश्वर के गुणों को प्रकट करने की क्षमता है।

_______ दिवंगत के लिए हम जो प्रार्थना करते हैं, वह उनकी आत्माओं की प्रगति को प्रभावित नहीं करता है।

_______ आत्मा का अस्तित्व कभी भी नष्ट नही होता है।

भाग 8

बहाउल्लाह बताते हैं :

"तुम यह जानो कि सुनने वाला प्रत्येक कान, यदि सदैव पवित्र और निर्दोष बना रहे तो अवश्य ही, सदैव और सभी दिशाओं से इस आवाज को सुनता है जो इन पवित्र शब्दों का उच्चारण करती हैः वस्तुतः, हम ईश्वर के हैं, और उसी को हम वापस हो जाएंगे। मनुष्य की भौतिक मृत्यु और उसकी वापसी के रहस्यों को प्रकट नहीं किया गया है, और वे अभी तक अनपढ़े हैं.

"मृत्यु प्रत्येक दृढ़ अनुयायी को वह प्याला अर्पित करती है जो वस्तुतः जीवन है। यह आनंद की वर्षा करती है और प्रसन्नता की संवाहिका है। यह अनन्त जीवन का उपहार प्रदान करती है।

"उनका, जिन्होंने मनुष्य के भौतिक अस्तित्व के फल को चख लिया है, जो कि एक सत्य ईश्वर, उच्चता हो उसकी महिमा की, को पहचानना है, यहाँ के बाद जीवन ऐसा होता है जिसका वर्णन करने में हम असमर्थ हैं। उसका ज्ञान, एकमात्र, ईश्वर, सभी लोकों के स्वामी के पास है।"[12]

"हे सर्वश्रेष्ठ के पुत्र ! मृत्यु को मैंने तेरे लिए आनन्द के एक सन्देशवाहक के रूप में भेजा है, फिर तू दुःख क्यों करता है? तेज को हमने तुझ पर प्रकाश डालने हेतु रचा है, फिर तू स्वयं को उससे छुपाता क्यों है ?"[13]

1. निम्नलिखित कथनों में से कौन से सही हैं ?

_______ मनुष्य की आत्मा ईश्वर से आती है और उसी के पास वापस जाएगी।

_______ मृत्यु के बाद जीवन का सारा ज्ञान ईश्वर के पास है।

_______ सच्चे अनुयायी के लिए, मृत्यु ही जीवन है।

_______ मृत्यु आनंद का संदेशवाहक है।

_______ मृत्यु के रहस्यों को सभी जानते हैं।

_______ हमें जीवन के वरदानों को संजोना चाहिए फिर भी मृत्यु से नहीं डरना चाहिए, क्योंकि यह आनंद की संदेशवाहक है।

_______ मृत्यु के बाद जीवन के बारे में जानना हमारे लिए महत्वपूर्ण नहीं है।

2. अब, इन भागों में हमने क्या अध्ययन किया है, उसको ध्यान में रखते हुए, जीवन, मृत्यु, शरीर और आत्मा के बारे में एक छोटा अनुच्छेद लिखें।

भाग 9

अब्दुल बहा स्पष्ट करते हैं :

"मानव जीवन के आरम्भ में मनुष्य गर्भाशय के संसार में भ्रूण की अवस्था में था। वहाँ उसने मानव अस्तित्व की वास्तविकता के लिये क्षमता और संपन्नता प्राप्त की। इस संसार के लिये आवश्यक सामर्थ्य और शक्तियाँ उसी संसार में प्राप्त कीं। इस संसार में उसे आँखों की जरूरत थी, उसने उन्हें गर्भाशय के संसार में अर्जित किया। उसे कानों की जरूरत थी, उसने उन्हें वहीं पाया। जिन शक्तियों की आवश्यकता उसे इस विश्व के लिये थी, उन्हें उसने गर्भाशय के संसार में अर्जित किया। उस संसार में वह इस संसार के लिए तैयार हो गया और जब वह इस संसार में आया तो उसने पाया कि उसके पास सभी आवश्यक शक्तियाँ थीं और इस जीवन के लिए सारे अंग–प्रत्यंग अर्जित कर लिए थे। इसका अर्थ यह भी कि इस संसार में उसे अगले संसार की तैयारी अवश्य ही कर लेनी चाहिये। उसे जिसकी दैवीय साम्राज्य के संसार में जरूरत पड़ेगी, उन्हें यहाँ अवश्य ही प्राप्त और तैयारी कर लेनी चाहिए। जैसे उसने गर्भाशय के संसार में ही इस संसार के लिये आवश्यक सभी शक्तियां अर्जित कर लीं उसी तरह दैवीय साम्राज्य में जिन शक्तियों की आवश्यकता होगी– अर्थात सभी दिव्य शक्तियाँ – अवश्य ही इस संसार में प्राप्त कर लेनी चाहिये।"[14]

1. यह निर्धारित करें कि निम्नलिखित सही हैं या नहीं :

_______ इस संसार के लिए आवश्यक सभी शक्तियाँ गर्भाशय के संसार में अर्जित हो जाती हैं।

_______ अगले संसार में जीवन के लिए खुद को तैयार करने की कोई जरूरत नहीं है।

_______ हमें ईश्वर के संसार में जो कुछ भी चाहिए वह यहाँ अवश्य ही प्राप्त कर लेना चाहिए।

_______ इस जीवन का उद्देश्य अगले जीवन के लिए आवश्यक शक्तियों को प्राप्त करना है।

_______ सच्चा जीवन तब शुरू होता है जब मृत्यु प्राप्त कर कोई दिव्य साम्राज्य में जाता है।

_______ सच्चा जीवन इस संसार में शुरू होता है और शारीरिक मृत्यु के बाद भी जारी रहता है।

2. गर्भाशय के संसार में मनुष्य को प्राप्त होने वाली कुछ क्षमताएं क्या हैं ? ______________

____

____

____

3. मृत्यु के बाद जीवन के लिए यहाँ से प्राप्त होने वाली कुछ निधियाँ क्या हैं ? ____________

____

____

____

भाग 10

बहाउल्लाह बताते हैं :

"इस दिवस में हर व्यक्ति का यह पूरा कर्तव्य है कि उस पर ईश्वर द्वारा बरसायी जाने वाली अनन्त कृपा की वर्षा से भाग प्राप्त करे। किसी को भी पात्र की विशालता या लघुता पर विचार नहीं करना चाहिए। कुछ का भाग हथेली में सिमट सकता है, अन्यों का एक प्याला भरने योग्य हो सकता है और किसी का बहुत अधिक हो सकता है।"[15]

1. उपरोक्त उद्धरण के प्रकाश में, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :

   क. इस दिवस में प्रत्येक व्यक्ति का क्या कर्तव्य है ? ______________________

   ____

   ख. ईश्वर से आपको मिले कुछ आशीर्वाद क्या हैं ? ______________________

   ____

   ____

   ग. उपरोक्त उद्धरण में 'पात्र' शब्द का क्या अर्थ है ? ______________________

   ____

   घ. जिस क्षमता से हमें संपन्न किया गया है, हमें उसकी 'विशालता या लघुता' पर विचार क्यों नहीं करना चाहिए ? ______________________

   ____

   ____

   ____

   ङ. ऐसी कौन सी चीजें हैं जो हमें ईश्वर की कृपा का भाग प्राप्त करने से रोकती हैं ? ___

   ____

   ____

   ____

2. निम्नलिखित में से कौन सा सही है ?

   _______ हमारी क्षमता की 'विशालता या लघुता' का हमारी चतुरता से संबंध है।

   _______ ईश्वर की सेवा करने के लिए, हमें अपनी कमजोरियों को भूलकर अपना पूरा भरोसा उसी पर रखने की आवश्यकता है।

   _______ यदि इस संसार में हम उन क्षमताओं को विकसित नहीं करते हैं जो ईश्वर ने हमें प्रदान की हैं, तो अगले संसार में आगमन पर हमारी आत्माएं निर्बल होंगी।

भाग 11

बहाउल्लाह कहते हैं :

"तुमने मुझसे आत्मा की प्रकृति के सम्बंध में पूछा है। इस सम्बंध में तुम यह जानो कि यह ईश्वर का एक चिन्ह है, यह वह दिव्य रत्न है जिसकी वास्तविकता को समझ पाने में सर्वाधिक ज्ञानीजन भी असमर्थ हैं और जिसका रहस्य अनावृत करने की आशा कोई भी मस्तिष्क नहीं कर सकता, चाहे वह कितना भी तीक्ष्ण क्यों न हो। ईश्वर की श्रेष्ठता की घोषणा करने में समस्त सृजित वस्तुओं में यह प्रथम है, उसकी ज्योति को पहचानने में यह प्रथम है, उसके सत्य को अंगीकार करने में यह प्रथम है और उसके समक्ष आराधना में विनीत होने में प्रथम है।"[16]

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थान भरें :

    क. आत्मा ईश्वर का ____________________ है।

    ख. आत्मा वह ____________________ है जिसकी ________________ को समझ पाने में सर्वाधिक ज्ञानीजन भी असमर्थ हैं और जिसका ____________________ ____________________ कोई भी मस्तिष्क नहीं कर सकता, चाहे वह कितना भी तीक्ष्ण क्यों न हो।

    ग. आत्मा ____________________________ की घोषणा करने में समस्त ________________ _____________________ में प्रथम है।

    घ. आत्मा उसकी ज्योति को _________________________ में प्रथम है।

    ङ. आत्मा उसके सत्य को _________________________ में प्रथम है।

    च. आत्मा उसके समक्ष आराधना में _________________________ होने में प्रथम है।

2. निम्नलिखित में से कौन सा सही है ?

    _______ 'अनावृत' का अर्थ है समझ पाना।

    _______ सभी निर्मित चीजों के बीच, मानव मस्तिष्क ईश्वर को सबसे पहले पहचानने वाला है।

    _______ 'तीक्ष्ण' का अर्थ है तेज होना।

    _______ एक विद्वान व्यक्ति आत्मा के रहस्य को समझता है।

    _______ केवल महान दार्शनिक ईश्वर की उत्कृष्टता की घोषणा कर सकते हैं।

    _______ आत्मा के बारे में सोचना जरूरी नहीं है क्योंकि हम इसे कभी समझ नहीं पाएंगे।

भाग 12

बहाउल्लाह बताते हैं :

"तुम उस पक्षी की भाँति हो जो अपने पूर्ण तथा आनंददायी विश्वास और शक्तिशाली पंखों की शक्ति के सहारे गगन के विस्तार में विचरण करता रहता है और तब तक नीचे नहीं आता जब तक उसे जल और मिट्टी से अपनी क्षुधा शांत करने की आवश्यकता नहीं होती। तब अपनी इच्छा के जाल में उलझ कर वह वहाँ तक उड़ान भरने में अपने को असमर्थ पाता है जहाँ से वह आया था। अब तक जो दैवी उल्लास में विचरण कर रहा था, अपने बोझिल पंखों के भार को हटाने में शक्तिहीन वही पक्षी अब धूल में अपना नीड़ बनाने को बाध्य हो जाता है। अतः, हे मेरे सेवकों ! अपने पंखों को भ्रम और मिथ्या इच्छाओं की मिट्टी से बोझिल न करो और इन्हें ईर्ष्या तथा घृणा की धूल से मैला न होने दो, ताकि तुम मेरे दिव्य ज्ञान के आकाश तक पहुँचने से वंचित ना हो जाओ।"[17]

1. नीचे दिए गए वाक्यों को पूरा करें।

   क. इस उद्धरण में बहाउल्लाह ने जिस पक्षी को संदर्भित किया गया है वह ______________ है।

   ख. यह पक्षी ________________ का निवासी है।

   ग. यदि इसके पंख बोझिल हो जाते हैं, तो यह पक्षी ______________ में अपना नीड़ बनाने को बाध्य हो जाता है।

2. अब निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें :

   क. आत्मा के 'पंख' कैसे 'बोझिल' हो जाते हैं ? ______________________________

   ____

   ____

   ख. ऐसे कुछ बोझ कौन से हैं, जो 'पृथ्वी की मिट्टी और जल', की भांति आत्मा के पंखों पर भार डालते हैं ? ____

   ____

   ____

   ग. ऐसी कौन सी चीजें हैं जो हमें ईश्वरीय ज्ञान की स्वर्गिक ऊँचाइयों में उड़ान भरने से रोक सकती हैं ? ____

   ____

   ____

   घ. एक आत्मा इस दुनिया की धूल के लिए अपने आकाशीय घर का आदान–प्रदान क्यों करेगी ? ____

____

____

3. निर्धारित करें कि क्या निम्नलिखित कथन सही हैं :

_______ सांसारिक आसक्ति हमारी आध्यात्मिक प्रगति को बाधित करती है।

_______ हमारा भ्रम और मिथ्या इच्छाएँ हमें दिव्य ज्ञान के आकाश में उड़ान भरने से रोकती हैं।

_______ ईर्ष्या और द्वेष मनुष्य के स्वाभाविक लक्षण हैं और आत्मा पर बोझ नहीं हैं।

_______ इस संसार की चीजों से स्वयं को अनासक्त कर उन बोझों से खुद को छुटकारा दिला सकते हैं जो हमें ईश्वरीय ज्ञान की स्वर्गिक ऊँचाइयों में उड़ान भरने से रोकते हैं।

_______ आत्मा का घर इस संसार में है।

भाग 13

बहाउल्लाह कहते हैं :

"संसार और इसमें रहने वाले प्राणियों की रचना करके, उसने, अपनी अबाधित और स्वायत्त इच्छा के सीधे प्रचालन से मनुष्य को उसे जानने और प्रेम करने की अद्वितीय क्षमता प्रदान करने का चुनाव किया–एक ऐसी क्षमता जिसे अवश्यमेव, सम्पूर्ण सृष्टि की रचना की प्रेरणा और प्रमुख उद्देश्य माना जाना चाहिए.....। अपनी प्रत्येक रचना की अंतरतम वास्तविकता पर उसने अपने नामों में से एक नाम का प्रकाश डाला है और अपने गुणों में से एक गुण की महिमा का प्राप्तकर्ता बनाया है। परन्तु, मनुष्य की वास्तविकता पर उसने अपने समस्त नामों एवं गुणों की चमक केन्द्रित की है और उसे अपने स्व का दर्पण बनाया है। उसने समस्त रचित वस्तुओं में से अकेले मनुष्य को ही इस महान कृपा, इस चिरंतन आशीष के लिए चुना है।"[18]

1. नीचे दिए गए रिक्त स्थान को भरें।

क. ईश्वर ने मनुष्य को उसे ________________________ की अद्वितीय क्षमता प्रदान प्रदान करने का चुनाव किया।

ख. अपनी प्रत्येक रचना की अंतरतम वास्तविकता पर उसने अपने ________________ का प्रकाश डाला है और अपने गुणों में से एक गुण की महिमा का ________________ बनाया है।

ग. परन्तु, मनुष्य की वास्तविकता पर उसने अपने समस्त _______ एवं _______ की चमक केन्द्रित की है और उसे अपने स्व का दर्पण बनाया है।

2. अब निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दें :

क. क्या आप ईश्वर के कुछ गुणों का उल्लेख कर सकते हैं ? ____________________

____

____

ख. ईश्वर के ऐसे कौन से गुण हैं जिन्हें मानव आत्मा प्रतिबिंबित कर सकती है ? ______

____

____

ग. इन गुणों को कैसे प्रकट किया जा सकता है ? ____________________

____

____

घ. किस महान कृपा के लिए मनुष्य को ही अकेला चुना गया है ? ______________

____

____

3. निम्नलिखित में से कौन सा सही है ?

______ मनुष्य बाकी सृष्टि से विशिष्ट नहीं है।

______ ईश्वर को जानने और उससे प्रेम करने की क्षमता सृजनात्मक आवेग और प्राथमिक उद्देश्य संपूर्ण सृष्टि को अंतर्निहित करती है।

______ प्रत्येक सृजित वस्तु की वास्तविकता ईश्वर के गुणों में से एक की प्राप्तकर्ता है।

______ मानव आत्मा ईश्वर के सभी गुणों को प्रतिबिंबित कर सकती है।

भाग 14

बहाउल्लाह हमें बताते हैं :

"ये ऊर्जाएँ जिनके द्वारा दिव्य–कृपा के दिवानक्षत्र और दिव्य मार्गदर्शन के स्रोत ने मनुष्य को वास्तविकता को आभूषित किया है, ठीक उसी प्रकार उसके अंदर सुसुप्त हैं जिस प्रकार मोमबत्ती में ज्योति छिपी होती है और जैसे प्रकाश की किरणें दीपक में प्रच्छन्न उपस्थित होती हैं। इन ऊर्जाओं की चमक सांसारिक इच्छाओं से ढक सकती है, जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश दर्पण पर पड़ी धूल से छिप सकता है। बिना सहायता के न तो मोमबत्ती, न ही दीपक स्वयं को प्रज्वलित कर सकता है, न ही दर्पण के लिए यह सम्भव है कि वह स्वयं को धूल से मुक्त कर सके। यह स्पष्ट है कि जब तक मोमबत्ती को जलाया न जाये, तब तक वह जल नहीं सकती और जब

तक दर्पण के ऊपर से मैल को हटाया न जाये तब तक वह न तो सूर्य का प्रतिबिंब दर्शा पायेगा ना ही उसके प्रकाश और उसकी महिमा को परावर्तित कर पाएगा।"[19]

1. 'सुसुप्त' शब्द का क्या अर्थ है ? ____________________

2. मानव आत्मा में कौन सी ऊर्जाएँ सुसुप्त हैं ? ____________________

3. एक दीपक में क्या क्षमता है ? ____________________

4. दर्पण में क्या क्षमता है ? ____________________

5. आपको एक दीपक के लिए क्या करना है ताकि वह प्रकाश दे सके ? ____________________

6. दर्पण के लिए आपको क्या करना होगा ताकि वह प्रकाश को परावर्तित कर सके ? ____________________

7. क्या दीपक और दर्पण अपनी क्षमता स्वयं प्रकट कर सकते हैं ? ____________________

8. हम मानव आत्मा की दशा को इन दो उदाहरणों से कैसे जोड़ सकते हैं ? ____________________

9. मानव आत्मा को अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने में कौन सम्भव कर सकता है ? ____________________

भाग 15

बहाउल्लाह कहते हैं :

"पुरातन अस्तित्व के ज्ञान का द्वारा मनुष्य के लिये सदा से बंद रहा है और सदा बंद रहेगा। उसके पवित्र प्रांगण में किसी भी मनुष्य का विवेक कभी प्रवेश को प्राप्त न हो सकेगा। फिर भी अपनी कृपा के चिन्ह, प्रेमपूर्ण–दया के प्रमाण स्वरूप ईश्वर ने मनुष्यों के लिए ईश्वर की एकता के प्रतीक, दैवीय मार्गदर्शन के अपने दिवानक्षत्रों को प्रकट किया है और उसने इन पवित्र जनों के ज्ञान को अपने ही ज्ञान के समान आभूषित किया है। जो इन्हें स्वीकारता है वह ईश्वर को स्वीकारता है, जो इनके आह्वान को सुनता है, वह ईश्वर की वाणी को सुनता है और जो उनके प्रकटीकरण के सत्य को प्रमाणित करता है, वह स्वयं ईश्वर के सत्य को ही प्रमाणित करता है।

जो उनसे विमुख हो जाता है, वह ईश्वर से विमुख हो जाता है, और जो उनमें विश्वास नहीं करता, वह ईश्वर में भी विश्वास नहीं करता। उनमें से प्रत्येक ईश्वर की राह है जो इस जगत को ईश्वर के उच्च जगत से जोड़ती है और धरती एवं आकाश के साम्राज्यों में प्रत्येक के लिए ईश्वर के सत्य के मानदंड हैं। वे मनुष्यों के मध्य ईश्वर के प्रकटरूप, उसके सत्य के प्रमाण तथा उसकी महिमा के चिह्न हैं।"[20]

1. उपरोक्त उद्धरण को ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें :

   क. क्या हमारे लिए ईश्वर को सीधे जानना संभव है ? ____________________

   ख. फिर, हम ईश्वर को कैसे जान सकते हैं ? ____________________
   ____

   ग. क्या आप दिव्य मार्गदर्शन के कुछ दिवानक्षत्रों के नाम बता सकते हैं ? __________
   ____

   घ. जो ईश्वरीय प्रकटरूपों के आह्वान को सुनता है, वह किसकी वाणी को सुनता है ? ___
   ____

   ङ. जो ईश्वरीय प्रकटरूपों के आह्वान से विमुख हो जाता है, वह किससे विमुख हो जाता है ? ____________________

2. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

   क. पुरातन अस्तित्व के ज्ञान का द्वार ________________ सदा से बंद रहा है और सदा बंद रहेगा।

   ख. ______________ किसी भी मनुष्य का विवेक कभी प्रवेश को प्राप्त न हो सकेगा।

   ग. ईश्वर ने अपनी ________ के चिन्ह, प्रेमपूर्ण–दया के प्रमाण स्वरूप अपने प्रकटरूपों को भेजा है।

   घ. ईश्वर के प्रकटरूपों का ज्ञान ________________ के समरूप है।

   ङ. जो इन्हें स्वीकारता है वह ________________ है।

   च. जो इनके आह्वान को सुनता है, वह ________________ ।

   छ. उनमें से प्रत्येक ईश्वर की राह है जो ________________________।

3. निम्नलिखित में से कौन सा सही है ?

_______ हम मात्र अपने प्रयासों के माध्यम से आध्यात्मिक विकास कर सकते हैं।

_______ ईश्वर ने हमें एक मन दिया है, और यह हमारी प्रगति के लिए पर्याप्त है।

_______ हम ईश्वर के प्रकटीकरण को पहचानकर आध्यात्मिक रूप से प्रगति करेंगे और अधिक प्रयास नहीं करना पड़ेगा।

_______ हम ईश्वर के प्रकटीकरण को पहचानकर और उसकी शिक्षाओं के अनुसार जीने का प्रयास करके आध्यात्मिक रूप से प्रगति कर सकते हैं।

_______ हम ईश्वर को सीधे जान सकते हैं।

_______ मनुष्य ईश्वर की तरह ही बन सकता है।

_______ ईश्वर मानवीय समझ से परे है।

_______ जब हम ईश्वर के प्रकटीकरण के शब्दों को सुनते हैं, तो हम ईश्वर की वाणी सुन रहे होते हैं।

भाग 16

बहाउल्लाह घोषणा करते हैं :

"ईश्वर के अवतार और संदेशवाहक मानवजाति के मार्गदर्शन के लिये समय–समय धरती पर भेजे जाते रहे हैं। उनके अवतरण का उद्देश्य समस्त मनुष्यों को शिक्षित करना है, ताकि मृत्यु के समय वे अत्यंत पवित्रता एवं शुद्धता और पूर्ण अनासक्ति के साथ सर्वोच्च सिंहासन की ओर प्रयाण करें।"[21]

और एक अनुच्छेद में वह कहते हैं :

"मनुष्य सर्वोच्च तिलस्म है। समुचित शिक्षा के अभाव ने ही जन्मजात बौद्धिक सम्पदा से उसे वंचित कर दिया है। ईश्वर के मुख से निकले एक शब्द से वह अस्तित्व में आया। एक और शब्द से अपनी शिक्षा के स्रोत को पहचानने हेतु मार्गनिर्देशित हुआ, फिर एक अन्य शब्द के माध्यम से उसका पद और नियति संरक्षित हुए। महान अस्तित्व ने कहा : मनुष्यों को बहुमूल्य रत्नों से भरी एक खान के समान समझो। केवल शिक्षा ही इसके कोषों को उजागर कर सकती है और मानवता को इसके लाभ उठाने के योग्य बना सकती है। यदि कोई उस पर मनन करे जो ईश्वर की पवित्र इच्छा के आकाश से भेजे गये ग्रंथों में प्रकट किया गया है तो वह तुरंत पहचान लेगा कि उनका उद्देश्य यह है कि सभी मनुष्यों को एक आत्मा के समान मानना होगा, ताकि इन शब्दों की छाप सबके हृदयों पर अंकित हो सके कि 'साम्राज्य ईश्वर का है' और दिव्य अनुकंपा, महिमा, एवं कृपा का प्रकाश सम्पूर्ण मानवजाति पर छा सके।"[22]

1. ईश्वर के अवतार और संदेशवाहकों को किस उद्देश्य से नीचे भेजा गया है ? ____________

2. उनके प्रकटीकरण के उद्देश्य में क्या अंतर्निहित है ? ____________

3. 'सर्वोच्च तिलस्म' शब्द का क्या अर्थ है ? ____________

4. एक समुचित शिक्षा की कमी का परिणाम क्या होता है ? ____________

5. एक समुचित शिक्षा क्या कर सकती है ? ____________

6. हमारी शिक्षा का स्रोत क्या है ? ____________

7. हमारी नियति क्या है ? ____________

8. शिक्षा कौन से कुछ रत्नों को उजागर करती है ? ____________

9. जब हम पवित्र लेखों पर मनन करते हैं, तो हम आसानी से क्या पहचान पाते हैं ? ____________

भाग 17

बहाउल्लाह कहते हैं :

"तुमने मुझसे आत्मा की उस अवस्था के विषय में पूछा है जब यह देह से अलग हो जाती है। तुम एक सत्य को जानो कि अगर आत्मा ने ईश्वर के पथ का अनुसरण किया है तो वह अवश्य ही ईश्वर की ओर लौट जायेगी और महिमावंत के सानिध्य को प्राप्त करेगी। ईश्वर की

धर्मपरायणता की सौगंध! यह उस पद को ग्रहण करेगी, जिसका वर्णन कोई भी लेखनी अथवा जिह्वा नहीं कर सकती। वह आत्मा जो ईश्वर के धर्म के प्रति आज्ञापालक रही है तथा उसकी राह पर अडिग बनी रही है, देहविसर्जन के पश्चात एक ऐसी शक्ति प्राप्त कर लेती है कि ईश्वर द्वारा सृजित समस्त लोक उससे लाभ प्राप्त कर सकते हैं।"[23]

1. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करें :

क. अगर आत्मा ने ईश्वर के पथ का अनुसरण किया है तो वह अवश्य ही ______________________________जायेगी

ख. यह उस पद को ग्रहण करेगी, ______________________________।

ग. वह __________ जो _______________ के प्रति _____________ रही है तथा उसकी _____________ पर ______________ बनी रही है, _______________ के पश्चात एक ऐसी _______________ कर लेती है कि _____________ समस्त लोक ____________ प्राप्त कर सकते हैं।

भाग 18

बहाउल्लाह हमें बताते हैं :

"धन्य है वह आत्मा जो देहविसर्जन के समय इस लोक के जनों की व्यर्थ–कल्पनाओं से भ्रष्ट न हुई हो और पवित्र बनी रही हो। ऐसी आत्मा अपने सृजनकर्ता की इच्छा के अनुरूप जीवित रहती और विचरण करती हैं, और सर्वोच्च स्वर्ग में प्रवेश करती है। स्वर्ग की अप्सरायें और उच्चतम प्रासादों के निवासी उसके इर्द गिर्द घूमेंगे और ईश्वर के अवतार तथा ईश्वर के चुने हुए जन उसके साथ रहने की कामना करेंगे। उनके साथ वह आत्मा स्वच्छंद वार्तालाप करेगी और वह बतायेगी जो सर्वलोकों के स्वामी, ईश्वर के मार्ग में उसने सहा है।"[24]

"उसे पापियों को क्षमा–दान करना चाहिए तथा उनकी दयनीय दशा के कारण उनसे घृणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि कोई नहीं जानता कि स्वयं उसका अपना अंत कैसा होगा। कितनी बार पापियों ने अपने अंतिम समय में धर्म के सार को प्राप्त किया, और अनन्त जीवनजल का पान कर उच्च शिखर की सभा को प्रयाण कर गया और कितनी बार ऐसा हुआ कि एक परम भक्त अपनी देह–विसर्जन के समय इतना बदल गया कि नरकाग्नि का ग्रास बन गया।"[25]

1. देहविसर्जन के समय हमारी आत्मा किस अवस्था में होनी चाहिए ? ____________________
____

2. कुछ व्यर्थ कल्पनाएँ क्या हैं ? ____________________________________
____
____
____

3. व्यर्थ कल्पनाओं से पवित्र रही आत्मा मरने के बाद किस दशा में जीवित और चलायमान रहेगी ?

____

____

____

____

4. ऐसी आत्मा के साथी कौन होंगे ? __________________________

____

5. क्या ऐसी आत्मा ईश्वर के अवतार तथा उसके चुने हुए जनों के साथ वार्तालाप कर पाएगी ?

____

6. क्या हम पहले से जानते हैं कि हमारा सांसारिक जीवन कब और कैसे खत्म होगा ? ______

7. हमारे लिए नियत अनन्त जीवनजल का पान करने के लिए हम अब क्या कर सकते हैं ? __

____

____

भाग 19

अब्दुल बहा समझाते हैं :

"जिस प्रकार भौतिक तत्वों से निर्मित इस ढांचे को उतार फेंकने के बाद भी मानव आत्मा सर्वदा बनी रहती है, उसी प्रकार, सभी विद्यमान वस्तुओं की भाँति, वह निःसंदेह रूप से प्रगति में भी समर्थ होती है। इसी लिए, कोई किसी दिवंगत आत्मा के लिए प्रार्थना कर सकता है कि वह उन्नति करे, उसे क्षमा प्रदान की जाए, या उसे दैवी अनुकम्पाओं, अनुग्रहों तथा कृपा का भाजन बनाया जाए। इसीलिए, बहाउल्लाह की प्रार्थनाओं में, परलोकवासी आत्माओं के लिए ईश्वर से क्षमा एवं दोषमुक्ति हेतु विनती की गई है। इसके अतिरिक्त, जैसे लोगों को इस संसार में ईश्वर की आवश्यकता है, उसी प्रकार उनको परलोक में भी उसकी जरूरत है। प्राणीजन तो सदा ही आवश्यकताग्रस्त रहते हैं और ईश्वर सदा ही उनसे पूरी तरह स्वाधीन होता है, चाहे इहलोक हो या परलोक।"[26]

हमें दिवंगत लोगों की आत्माओं के लिए प्रार्थना क्यों करनी चाहिए ?

____

____

____

____

____

____

भाग 20

अब्दुल बहा लिखते हैं :

"जब मानव आत्मा धूल के इस क्षणिक ढ़ेर से बाहर निकलेगी और ईश्वर के लोक की ओर बढ़ेगी, तब आवरण हट जाऐंगे, और यथार्थताएं प्रकाश में आयेंगी, और पहले की समस्त अज्ञात चीजें ज्ञात हो जायेंगी, और छिपे सत्य समझ में आयेंगे।

"विचार करो कि कैसे गर्भ की दुनिया में व्यक्ति कान से बधिर और आंखों से अंधा और जिह्वा से मूक था, कैसे वह किसी भी प्रत्यक्ष बोध से अनभिज्ञ था। लेकिन जैसे ही एक बार, अंधकार की उस दुनिया से, वह इस प्रकाश की दुनिया में आ गया, तब उसकी आंख ने देखा, उसके कान ने सुना, उसकी जिह्वा ने बोला। ठीक उसी तरह, जब वह इस नश्वर क्षेत्र से दूर ईश्वर के साम्राज्य की ओर जाता है, तो वह चेतना में जन्म लेगा, तब उसके ज्ञान चक्षु खुलेंगे, उसकी आत्मा के कान सुनेंगे, और सभी सत्य जिनके प्रति वह अनजान था, साफ और स्पष्ट हो जायेंगे।"[27]

1. नीचे दिए गए रिक्त स्थान को भरें।

क. जब मानव आत्मा इस दुनिया को छोड़ देती है, तब

– आवरण ________________________ ,

– और यथार्थताएं ______________________________ ,

– और _____________ की समस्त अस्पष्ट चीजें स्पष्ट हो जायेंगी,

– और छिपे सत्य __________________________ जायेंगे।

ख. _______________ की दुनिया में हमारे, कान _________, आंखें ____________ थीं, जिह्वा ______________________ थी।

ग. जब हम इस संसार में पैदा हुए, हमारी आंख ने ________ , हमारे कान ने ___________, हमारी जिह्वा ने ___________।

घ. ठीक उसी तरह, जब हम ईश्वर के लोक में जाएंगे तो ________ में ________ लेंगे ।

च. तब हमारे ________ चक्षु खुलेंगे, हमारी ________ के कान ________, और सभी ________ जिनके प्रति हम अनजान थे, ________ और ________ हो जायेंगे।

2. तय करें कि क्या निम्नलिखित कथन सत्य हैं :

_______ जब हम गर्भ की दुनिया में होते हैं, तो हम इस दुनिया के बारे में जानते हैं।

_______ मृत्यु के बाद हमारी स्थिति इस जीवन में हमारे लिए एक सच्चाई है।

_______ मृत्यु के बाद हमारे सामने ,पूरी तरह से नये क्षितिज, खुल जाएँगे।

_______ जब हम मर जाते हैं, हम फिर जन्म लेकर इस दुनिया में लौट कर आते हैं।

भाग 21

बहाउल्लाह कहते हैं :

"और अब अपने इस प्रश्न के सम्बंध में कि क्या मानव–आत्माएँ देहविसर्जन के पश्चात् एक दूसरे के प्रति चेतन रहती हैं, तुम यह जान लो कि बहा के जनों की आत्माएँ जिन्होंने रक्ताभ–नौका में प्रवेश पा कर स्थान ग्रहण कर लिया है, एक–दूसरे से मिलन और आत्मीय वार्तालाप करेंगी और अपने जीवन, अपनी अभिलाषाओं, अपने उद्देश्यों, अपने प्रयासों में इस प्रकार समीप होंगी जैसे वे एक आत्मा हों। वे निश्चित ही सु–अवगत हैं, तीक्ष्ण दृष्टि धारी हैं, समझ से सम्पन्न हैं। ऐसा ही सर्वज्ञाता, सर्वविवेकी ईश्वर ने आदेशित किया है।"

"बहा के जन, जो ईश्वर की नौका के वासी हैं, एक दूसरे की अवस्थाओं और परिस्थितियों से सुपरिचित हैं और एक दूसरे से अंतरंगता तथा सहचर्य के बंधनों से जुड़े हैं। यह अवस्था अवश्य ही उनकी आस्था और आचरण पर निर्भर होनी चाहिए। जो एक ही वर्ग व स्तर के हैं वे एक–दूसरे की क्षमता, चरित्र, उपलब्धियों और योग्यताओं से भलीभाँति परिचित हैं। जो निचले स्तर के हैं, वे अपने से उच्च्य स्तर के लोगों के पद को समझने, खूबियों को मापने, में पर्याप्त सक्षम नहीं हैं। प्रत्येक ईश्वर से अपना भाग ग्रहण करेगा। धन्य है वह जिसने अपना मुखड़ा ईश्वर की ओर किया है और उसके प्रेम में अडिगता पूर्वक चला है, जब तक कि उसकी आत्मा ने ईश्वर की ओर उड़ान नहीं भर ली, जो सभी का स्वामी, सर्व शक्तिशाली, सदा–क्षमाशील, सर्वदयालु है।"[28]

1. अगली दुनिया में, क्या हम उन लोगों को पहचान पाएंगे जिन्हें हम इस दुनिया में जानते हैं ?

____

2. अगली दुनिया में आत्माओं के बीच का संबंध कितना करीब होगा ?____________________

____

3. अगली दुनिया में आत्माओं के बीच अंतर और विशिष्टता किस पर निर्भर करेगी ? ________

____

4. क्या कोई ईश्वर की कृपा से वंचित होगा ? ______________________________

भाग 22

बहाउल्लाह हमें समझाते हैं :

"हे मेरे सेवकों ! तुम दुःखी न हो यदि, इस दुनिया में, तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध ईश्वर द्वारा आज्ञा दी गयी है या प्रकट किया गया है, क्योंकि निश्चित रूप से परम आनंद और दैवीय हर्ष के दिन तुम्हारे लिये संरक्षित हैं। पवित्र और आध्यात्मिक भव्यता से परिपूर्ण लोक तुम्हारे नेत्रों के समक्ष प्रकट किये जायेंगे। ईश्वर ने नियत किया है कि तुम इहलोक तथा परलोक में उनके लाभ प्राप्त करोगे, उनके आनन्द में भागीदार बनोगे और उनकी कायम भव्यता का भाग प्राप्त करोगे।" इनमें से प्रत्येक, निःसंदेह ही तुम प्राप्त करोगे।"[29]

1. निर्णय लें कि निम्नलिखित में से कौन से सही है :

_______ हमें तब दुःखी हो जाना चाहिए जब चीजें वैसी नहीं होती जैसा हम चाहते हैं कि वे हों।

_______ सभी, अच्छा हो या बुरा, ईश्वर द्वारा निर्धारित किया जाता है।

_______ परम आनंद के दिन हम सभी की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

_______ पवित्र और आध्यात्मिक भव्यता से परिपूर्ण लोक हम निश्चित ही देखेंगे।

_______ इस जीवन तथा इस के बाद के जीवन दोनों में पवित्र और आध्यात्मिक भव्यता से परिपूर्ण लोकों के लाभों को प्राप्त करना हमारी नियति है।

2. जब चीजें हमारी इच्छा के विरुद्ध होती हैं, तो हमें दुःखी क्यों नहीं होना चाहिए ? _______

____

____

____

3. इस अनुच्छेद में बहाउल्लाह हमसे क्या वादा करते हैं ? _______________

____

____

____

भाग 23

इस इकाई में, आपने मानव जीवन के अर्थ पर चिंतन किया है। आपने आत्मा की प्रकृति, इस दुनिया में जीवन के उद्देश्य, आध्यात्मिक गुणों को विकसित करने की महत्ता और भव्य एवं आनंद से भरे एक अनन्त जीवन के लिए हमें दिये गये वचन के बारे में बहुत कुछ सीखा। पुस्तक की दूसरी इकाई में, हमने अपने स्वयं के आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास को आगे बढ़ाने और समाज के रूपान्तरण में योगदान देने के लिए एक दोहरे उद्देश्य की बात की। यहाँ उस अवधारणा पर लौटने और इस उद्देश्य

के दोनों पहलुओं पर ध्यान देने के महत्व के बारे में, उस अंतर्दृष्टि के प्रकाश में जो आपने आत्मा की प्रगति के बारे में प्राप्त किया है, सोचने का एक अवसर है। आपके समूह में नीचे दिए गए विषयों पर चर्चा से आपके चिंतन लाभान्वित हो सकते हैं।

1. *आध्यात्मिक गुणों का विकास करना*
2. *ईश्वर के नियमों का पालन करना*
3. *मानव जाति के कल्याण में योगदान देना*
4. *सेवा के पथ पर आगे बढ़ना*

संदर्भ

1. अब्दुल बहा, अमृतवाणी से, 10 नवम्बर 1911 स. 29, 12–13
2. शोगी एफेंदी, मार्गदर्शन की किरणें, सं. 1820
3. विश्व न्याय मंदिर का पत्र, 28 जुलाई, 2016
4. अब्दुल बहा, कुछ उत्तरित प्रश्न, सं. 66.3
5. अब्दुल बहा, कुछ उत्तरित प्रश्न, सं. 38.5
6. अब्दुल बहा, अमृतवाणी से, 09 नवम्बर 1911 स. 28.16
7. शोगी एफेंदी की ओर से, 31 दिसम्बर 1937 का पत्र, मार्गदर्शन की किरणों, सं. 680
8. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 132, पैरा 8
9. अब्दुल बहा, कुछ उत्तरित प्रश्न, सं. 61.1–2
10. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 130, पैरा 2
11. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 131, पैरा 1
12. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 165, पैरा 1–3
13. बहाउल्लाह, निगूढ़ वचन, अरबी से 32
14. अब्दुल बहा, प्रोमलगेशन ऑफ यूनीवर्सल पीस, पेज 315–16
15. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 5, पैरा 4
16. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 132, पैरा 1
17. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 158, पैरा 6
18. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 27, पैरा 2
19. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 27, पैरा 3
20. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 21, पैरा 1
21. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 81, पैरा 1
22. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 122, पैरा 1

23. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 82, पैरा 7

24. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 81, पैरा 1

25. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 125, पैरा 3

26. अब्दुल बहा, कुछ उत्तरित प्रश्न, सं. 62.3

27. अब्दुल बहा के लेखों से चयन, सं. 149.3–4

28. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 136, पैरा 1–2

29. बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन, 153, पैरा 9